वर्ष 9, अंक 1, इलाहाबाद अक्टूब 2007

विश्व स्नेह समाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत 5 रुपये

खुशहाल दाम्पत्य के लिए जरुरी है आपसी सामजस्य

फर्जी डॉक्टर

चार कहानिया

पर्यावरण की रक्षा के लिए युवकों को आगे आना चाहिए

अंग्रेजी से नहीं, अंग्रेजियत से विरोध है

अध्यापिका से मुख्यमंत्री की कुर्सी तक चौथी बार पहुंची सुश्री मायावती का सफरनामा

मिसाइल क्रांति के जनक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

स्नेहांगन कला केन्द्र

एल.आई.जी.-६३/२६८, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

सिलाई, कढ़ाई, पेंटिग (सभी प्रकार की), फ्लॉवर मेंकिग, डॉल मेंकिग, ज्वेलरी मेंकिग, टवॉयज मेंकिग, कुकींग, बेकिग, इग्लिश स्पोकेन, कम्प्यूटर के सभी कोर्सेस सीखने हेतु सम्पर्क करें.

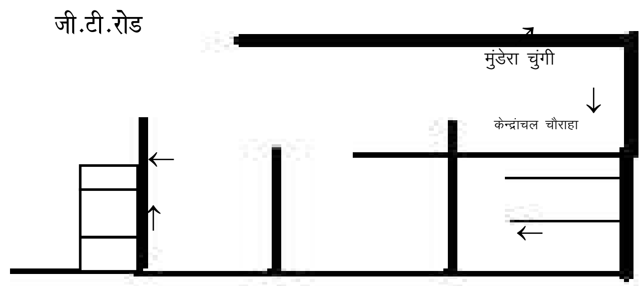

नोटः अपने जिले, शहर, गॉव में शाखा खोलने हेतु जवाबी लिफाफा के साथ लिखेंः

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें.

विशेष आकर्षणः

१. मात्र लागत मूल्य पर
२. विक्री की व्यवस्था
३. प्रचार प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

प्रचार सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

विश्व स्नेह समाज

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

वर्षः६ अंकः१ अक्टूबर २००६ इलाहाबाद

दिल्ली हाईकोर्ट का स्वागतयोग्य फैसला

दिल्ली उच्च न्यायालय ने महत्वपूर्ण लोगों की सुरक्षा को लेकर जो कहा है, वह पढ़कर ऐसा लगता है जैसे अदालत ने जनता के मुँह की बात छीन ली हो या जनता के मन की बात कह दी हो. अदालत का कहना है कि राजनेता कोई राष्ट्रीय थाती नहीं है जो ढेर सारे गार्डो से उनकी सुरक्षा कराई जाये. उनके जीवन को इतना ही बड़ा खतरा है तो उन्हें अपने घरों या दफ्तरों के भीतर दुबके रहना चाहिए. उलटे सचाई यह है कि उनके सार्वजनिक स्थलों पर आने भर से आम जनता का जीवन खतरे में पड़ जाता है. जब आम जनता सड़को पर बम धमाको से मारी जा रही हो, वृद्धजन अपने ही घरों में गला दबाकर मारे जा रहे हो, तब कुछ वीआईपी लोगों की सुरक्षा में इतने सारे लोगों लगाए रखने का क्या औचित्य है?

अदालत ने जो कुछ भी कहा, वह यो हीं नहीं कहा है. अपने देश में वीआईपी सुरक्षा की जो हालत है, वह सिर के ऊपर से गुजर चुकी है. सुरक्षा अब राजनेताओं की प्रतिष्ठा की बात बन गई है. वे सुरक्षा की मांग अपने खतरे के लिए नहीं बल्कि अपनी हैसियत को आम जनता को दिखाने के लिए करते है. दिल्ली में ७० वीआईपी है, जिनकी सुरक्षा का जिम्मा दिल्ली पुलिस पर है. ३००० पुलिस कर्मी इनकी सुरक्षा में लगे हुए है. इस सुरक्षा पर २० करोड़ रुपये मासिक खर्च होते है. ये तो केवल दिल्ली की अकेले बात है जबकि देश भर में कुल २००० लोग सरकारी सुरक्षा का फायदा उठा रहे है. एक वीआईपी की सुरक्षा पर २८,५७१४२.८६ रुपये प्रतिमाह खर्च होते है. इसप्रकार २००० वीआईपी पर कुल ५,७१,४२,८४,०००.०० रुपये प्रतिमाह खर्च होते है. यह सोचने की बात है कि वह देश जहॉ की एक चौथाई जनता भूखे पेट सोती हो वहॉ प्रत्येक माह लगभग पौने छः अरब रुपये दिखावे के नाम पर बर्बाद हो रहे है. जेड प्लस सुरक्षा प्राप्त वीआईपी के साथ ५१ सुरक्षा कर्मी और जेड श्रेणी सुरक्षा पर २८ कर्मी मिलते है. आखिर क्यों? सबसे बड़ी बात यह होती है वास्तव में खतरा आने पर यह सुरक्षा की खर्चिली फौज हाथ मलती रह जाती है. आपने अक्सर समाचार पत्रों व टीवी चैनलों के माध्यम से सुना होगा कि पंजाब और कश्मीर में आतंकवादी किस कदर अति सुरक्षित क्षेत्रों में घुसे चले आते है, यह किसी से छुपा नहीं है. यदि किसी वीआईपी की जानको वाकई खतरा हो तो बात समझ में आती है, लेकिन हकीकत यह है कि ज्यादातर को कोई खतरा ही नहीं होता. क्या यह देश के करदाताओं के धन का दुरुपयोग नही है. सरकार जनता के पैसों को स्वहित के लिए पानी की तरह बहाती है. आम आदमी घास पूस की तरह प्रतिदिन मारे जाते है उनकी सुरक्षा से सरकार को कोई मतलब नही है. आज घरो से महिलाओं का निकलना, ट्रेन में सफर करना खतरे से खाली नहीं है यह हमारे जनतंत्र का मजाक नहीं तो और क्या है?

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालयः

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर पढ़िए

प्रेरक प्रसंग–4
तीर्थराज प्रयागः इतिहास के आईने में–5
जब जामा मस्जिद से वेदमंत्र गूंजा था, निकनेम याहू–9
खुलासाः बी.ए.एम.एस, बी.यू.एम.एस डाक्टर सावधान –10
विदाई बेला–12
सफल व्यक्तित्व–13
स्नेह बाल मंच–27
कविताएं–6,8,14,16,17,21,25,26,29
साहित्य समाचार–11, 33
अध्यात्म–18
कहानी–15,22 लघु कथा–20,21
हिपेटाइटिस रोग से कैसे–28
ज्योतिष–30
जरा हंस दो मेरे भाय–30
चिट्ठी आई है–31
समीक्षा–34

धनिकः श्रोत्रियों राजा नदी वैद्यस्तु पञ्चमः।
पञ्च यत्र न विद्यन्ते न तत्र दिवस वसेत्।।

जहां धनिक, श्रोत्रिय अर्थात वेद को जानने वाला ब्राहमण, राजा, नदी और वैद्य ये पांच चीजें न हों, उस स्थान पर मनुष्य को नहीं रहना चाहिए. **चाणक्य**

++++++++++++++++++++++++++++++++

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा।
असम्भिार्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेत् सः।।

जिसकी बुद्धि विद्या का और विद्या बुद्धि का अनुसरण करती है तथा जो शिष्ट और मान्य व्यक्तियों की बातों का उल्लंघन नहीं करता, वही पण्डित कहा जाने योग्य है. **विदुर**

++++++++++++++++++++++++++++++++

प्राप्त हुए धन का उपयोग करने में दो भूलें हुआ करती है, जिन्हें ध्यान में रखना चाहिए. अपात्र को धन देना और सुपात्र को धन न देना. **वेद व्यास**

++++++++++++++++++++++++++++++++

भाग्य भी वीरों की ही सहायता करता है. **टैरेन्य**

++++++++++++++++++++++++++++++++

जीवन अनंत है और मनुष्य की सामर्थ्य भी अनंत है. **यशपाल**

आदाब अर्ज

पावस ने दस्तक दई, उछल उठा चितचोर।
कोयल कूकी आम पर, वन में नाचा मोर।।

तला पुखरियाॅ भर गई, दादुर गाएॅ गीत।
बिरहिन मन पीड़ा जगी, कब लौटे मनमीत।।

रिम झिम रिम झिम झर रहे, ये सावन के मेह।
काल कोठरी से लगें, बिन साजन के गेह।।

घन गरजें दामिण करे, झिल-मिल खेल।
बिरहिन जियरा जल रहा, ज्यों बाती बिन तेल।।

बतलाओ किससे कहॅू, 'मोहन' हिय की पीर।
मनसिज दस्तक दे रहा, तन मन होत अधीर।।

बदरा तुम जाओ वहाॅ, जिनके घर सुख चैन।
यहाॅ तुम्हारी वजह से, झड़ी लगाये नैन।।

मार रहे बेकार में, पीड़ाओं के वाण।
तुम को क्या मिल जायेगा, लेकर मेरे प्राण।।

बूॅद-बूॅद सुलगा रही, अंग अंग में आग।
कोई पूछने आए अस, कहाॅ हमारे भाग।।

डाॅ0 मोहन आनन्द तिवारी, भोपाल

++++++++++++++++++++++++++

करें बात सब धर्म की, धरम न जाने अर्थ।
धरम मूल इन्सानियत, बाकी सब है व्यर्थ।।1।।

मूरत पूजें जग बहुत, मान उसे भगवान।
हरि तो उनको पूजता, चले धरम ईमान।।2।।

जान-बूझ करते जुलम, धोखा दे इन्सान।
हाथ जोड़ बिनती करें, दया करो भगवान।।3।।

मेहनत से अर्जित करो, मान 'सरल' यह सीख।
उद्यम जो करते नहीं, जिये सहारे भीख।।4।।

वी.के. अग्रवाल, बरेली

गुरुपल में ले शिष्य के, गुण-अवगुण पहचान।
दोष मिटाकर बना दे, आदम से इंसान।।

माटी शिष्य कुम्हार गुरू, करे न कुछ संकोच।
कूटे साने रात-दिन, तब पैदा हो लोच।।

कथनी करनी एक हो, गुरू उसको ही मान।
चिंतन चरखा पठन रुई, सूत आचरण जान।।

शिष्यों को गुरू एक है, गुरु को शिष्य अनेक।
भक्तों के हरि एक ज्यों, हरि के भक्त अनेक।।

गुरू तो गिरि सम उच्च हो, शिष्य'सलिल' समदीन।
निर्मल करती साधना, जल को जैसे मीम।।

ज्ञानदीप; गुरु ज्योति है, तम का करे विनाश।
लगन-परिश्रम शुद्ध घृत, प्रसरित प्रखर प्रकाश।।

गुरु दुनिया में कम मिलें, मिलते गुरु घंटाल।
पाठ पढ़ाते त्याग का, स्वयं उड़ाते माल।।

गुरू गरिमा-गायन करे, पाप-ताप का नाश।
कृपा गुरू की काटती, महाकाल का पाश।

इ. संजीव वर्मा 'सलिल',जबलपुर, म.प्र.

जानकारी

तीर्थराज प्रयाग:इतिहास के आईने में

कृष्ण कुमार यादव, कानपुर

प्रयाग बदलते हुए इतिहास के उत्थान-पतन को देखा है, राष्ट्र की सामाजिक व सांस्कृतिक गरिमा का यह गवाह रहा है तो राजनैतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र भी.

ऐसी मान्यता है कि ब्रह्म ने यहीं यज्ञ किया था, सो सृष्टि की प्रथम यज्ञ स्थली होने के कारण इसे प्रयाग कहा गया.

मुगल सम्राट अकबर प्रयाग की धार्मिक और सांस्कृतिक ऐतिहासिकता से प्रभावित होकर इस नगरी को ईश्वर या अल्लाह का स्थान कहा.

मौर्यकाल में पाटलिपुत्र, उज्जयिनी और तक्षशिला के साथ कौशाम्बी व प्रयाग भी चोटी के नगरों में थे.

गुप्तकालीन शासकों की प्रयाग राजधानी रही.

भारत के ऐतिहासिक मानचित्र पर इलाहाबाद एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ है, जिसकी रोशनी कभी भी धूमिल नहीं हो सकती. इस नगर ने युगों की करवट देखी है, बदलते हुए इतिहास के उत्थान-पतन को देखा है, राष्ट्र की सामाजिक व सांस्कृतिक गरिमा का यह गवाह रहा है तो राजनैतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र भी. पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस नगर का नाम 'प्रयाग' है. ऐसी मान्यता है कि चार वेदों की प्राप्ति के पश्चात ब्रह्म ने यहीं यज्ञ किया था, सो सृष्टि की प्रथम यज्ञ स्थली होने के कारण इसे प्रयाग कहा गया. प्रयाग माने प्रथम यज्ञ. कालान्तर में मुगल सम्राट अकबर इस नगर की धार्मिक और सांस्कृतिक ऐतिहासिकता से काफी प्रभावित हुआ. उसने भी इस नगरी को ईश्वर या अल्लाह का स्थान कहा और इसका नामकरण 'इलहवास' किया अर्थात जहाँ पर अल्लाह का वास है. परन्तु इस सम्बन्ध में एक मान्यता और भी है कि इला नामक एक धार्मिक सम्राट, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर (अब झूंसी) थी के वास के कारण इस जगह का नाम 'इलावास' पड़ा. कालान्तर में अंग्रेजों ने इसका उच्चारण 'इलाहाबाद' कर दिया.

इलाहाबाद एक अत्यन्त पवित्र नगर है, जिसकी पवित्रता गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम के कारण है. इलाहाबाद को संगमनगरी, कुम्भनगरी और तीर्थराज भी कहा गया है, जैसे-देप्रयाग, कर्ण प्रयाग, रूद्रप्रयाग आदि. केवल उस स्थान पर जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है प्रयागराज कहा गया. इस प्रयागराज इलाहाबाद के बारे में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है-'को कहिं सकई प्रयाग प्रभाऊ, कलुष पुंज कुंजर मगराऊ' अगर हम प्रागैतिहासिक काल में झांककर देखें तो इलाहाबाद और मिर्जापुर के मध्य अवस्थित बेलनघाटी में पुरापाषाण काल के पशु-अवशेष प्राप्त हुये है. बेलनघाटी में विंध्यपर्वत के उत्तरी पृष्ठों पर लगातार तीन अवस्थायें-पुरापाषाण, मध्यपाषाण व नवपाषाण काल एक के बाद एक पाई जाती है. भारत में नवपाषाण युग की शुरुआत ईसा पूर्व छठीं सहस्त्राब्दी के आसपास हुयी और इसी समय से उपमहाद्वीप में चावल, गेहूँ, व जौ जैसी फसले उगायी जाने लगी. इलाहाबाद जिले के नवपाषाण स्थलों की यह विशेषता है कि यहाँ ईसा पूर्व छठी सहस्त्राब्दी में भी चावल का उत्पादन होता था. इसी कारण वैदिक संस्कृति का उद्भव भले ही सप्तसिन्धु देश-पंजाब में हुआ हो, पर विकास पश्चिमी गंगा घाटी में ही हुआ. गंगा-यमुना दोआब पर प्रभुत्व पाने हेतु तमाम द्वितीय प्रमुख नदी सरस्वती प्रारम्भ से ही प्रयाग में प्रवाहमान थी. सिन्धु सभ्यता के बाद भारत में 'द्वितीय नगरीकरण' गंगा के मैदानों में ही हुआ. यहाँ तक कि सभी उत्तरकालीन वैदिक ग्रंथ लगभग १०००-६००ई०पू० में उत्तरी गंगा के मैदान में रचे गये. उत्तर वैदिक काल के प्रमुख नगरों में से एक कौशाम्बी था, जो कि वर्तमान में हस्तिनापुर बाढ़ में बह गया और कुरूवंश में जो जीवित रहे वे इलाहाबाद के पास कौशाम्बी में आकर बस गये. बुद्ध के समय अवस्थित १६ बड़े-बड़े महाजनपदों में से एक वत्स की राजधानी कौशाम्बी थी.

मौर्यकाल में पाटलिपुत्र, उज्जयिनी और तक्षशिला के साथ कौशाम्बी व प्रयाग भी चोटी के नगरों में थे. प्रयाग में मौर्य शासक अशोक के ६ स्तम्भ लेख प्राप्त हुये हैं. संगम-तट पर किले में अवस्थित १०.६ मी० ऊँचा अशोक स्तम्भ २३२ ई०पू० का है, जिस पर तीन शासकों के लेख खुदे हुए है. २००ई० में समुद्रगुप्त इसे कौशाम्बी से प्रयाग लाया और उसके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित 'प्रयाग-प्रशस्ति' इस पर खुदवाया गया. कालान्तर में

१६०५ ई० में इस स्तम्भ पर मुगल सम्राट जहॉगीर के तख़्त पर बैठने का वाकया भी खुदवाया गया. १८०० ई० में किले की प्राचीर सीधी बनाने हेतु इस स्तम्भ को गिरा दिया गया और १८३८ में अंग्रेजों ने इसे पुनः खड़ा किया.

गुप्तकालीन शासकों की प्रयाग राजधानी रही. गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित 'प्रयाग-प्रशस्ति' उसी स्तम्भ पर खुदा है, जिस पर अशोक का है. इलाहाबाद में प्राप्त ४४८ ई० के एक गुप्त अभिलेख से ज्ञात होता है कि पांचवीं सदी में भारत में दाशमिक पद्धति ज्ञात थी. इसी प्रकार इलाहाबाद के करछना नगर के समीप अवस्थित गढ़वा से एक-एक चन्द्रगुप्त व स्कन्दगुप्त का औ दो अभिलेख कुमारगुप्त के प्राप्त हुए है, जो उस काल में प्रयाग की महत्ता दर्शाते है. 'कामसूत्र' के रचयिता मलंग वात्सायन का जन्म भी कौशाम्बी में हुआ था. भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट माने जाने वाले हर्षवर्धन के समय में भी प्रयाग की महत्ता अपने चरम पर थी. चीनी यात्री हवेनसांग लिखता है कि-"इस काल में पाटलिपुत्र और वैशाली पतनावस्था में थे, इसके विपरीत दोआब में प्रयाग और कन्नौज महत्वपूर्ण हो चले थे." हवेनसांग ने हर्ष द्वारा महायान बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ कन्नौज और तत्पश्चात प्रयाग में आयोजित 'महामोक्ष परिषद' का भी उल्लेख किया है. इस सम्मेलन में हर्ष अपने शरीर के वस्त्रों को छोड़कर सर्वस्व दान कर देता था. स्पष्ट है कि प्रयाग बौद्धों हेतु भी उतना ही महत्वपूर्ण रहा है, जितना कि हिन्दुओं हेतु. कुम्भ में संगम में स्नान का प्रथम ऐतिहासिक अभिलेख भी हर्ष के ही काल का है. प्रयाग में घाटों की एक ऐतिहासिक परम्परा रही है. यहॉ स्थित 'दशाश्मेध घाट' पर प्रयाग महात्म्य के विषय में मार्कंडेय ऋषि द्वारा अनुप्राणित होकर धर्मराज युधिष्ठिर ने दस यज्ञ किए और अपने पूर्वजों की आत्मा हेतु शांति प्रार्थना की. धर्मराज द्वारा दस यज्ञों को सम्पादित करने के कारण ही इसे दशाश्वमेध घाट कहा गया. एक अन्य प्रसिद्ध घाट 'रामघाट' (झूंसी) है. महाराज इला जो कि भगवान राम के पूर्वज थे, ने यहीं पर राज किया था. उनकी संतान व चन्द्रवंशीय राजा पुरूरवा और गंधर्व मिलकर इसी घाट के किनारे अग्निहोत्र किया करते थे. धार्मिक अनुष्ठानों और स्नानादि हेतु प्रसिद्ध 'त्रिवेणी घाट' वह जगह है जहॉ पर यमुना पूरी दृढ़ता के साथ स्थिर हो जाती है व साक्षात् तापस बाला की भांति गंगा जी यमुना की ओर प्रवाहमान होकर संगम की कल्पना को साकार करती है. त्रिवेणी घाट से ही थोड़ा आगे 'संगम घाट' है. संगम क्षेत्र का एक ऐतिहासिक घाट 'किला घाट' है. अकबर द्वारा निर्मित ऐतिहासिक किले की प्राचीरों को जहॉ यमुना स्पर्श करती है, उसी के पास यह किला घाट है और यहीं पर संगम तट तक जाने हेतु नावों का जमावड़ा लगा रहता है. इसी घाट से पश्चिम की ओर थोड़ा बढ़ने पर अदृश्य सलिला सरस्वती के समीकृत 'सरस्वती घाट' है. 'रसूलाबाद घाट' प्रयाग का सबसे महत्वपूर्ण घाट है. महिलाओं हेतु सर्वथा निषिद्ध शमशानघाट की विचारधारा के विरूद्ध यहॉ अभी हाल तक महाराजिन बुआ नामक महिला शमशानघाट में वैदिक रीति से अंतिम संस्कार सम्पन्न कराती थी.

सल्तनत काल में भी इलाहाबाद सामारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा. अलाउद्दीन खिलजी ने इलाहाबाद में कड़ा के निकट अपने चाचा व श्वसुर जलालुद्दीन खिलजी की धोखे से हत्या कर अपने साम्राज्य की स्थापना की. मुगल-काल में भी इलाहाबाद अपनी ऐतिहासिकता को बनाये रहा. अकबर ने संगम तट पर १५८३ ई० में किले का निर्माण कराया. ऐसी भी मान्यता है कि यह किला अशोक द्वारा निर्मित था और अकबर ने इसका जीर्णोद्धार मात्र करवाया. पुनः १८३३ में अंग्रेजों ने इस किले का पुनर्निर्माण करवाया और वर्तमान रुप दिया. इस किले में भारतीय और ईरानी वास्तुकला का मेल आज भी कहीं-कहीं दिखायी देता है. इस किले में २३२ ई०पू० का अशोक का स्तम्भ, जोधाबाई महल, पातालपुरी मंदिर, सरस्वती कूप और अक्षय वट अवस्थित है. ऐसी मान्यता है कि वनवास के दौरान भगवान राम इस वट-वृक्ष के नीचे ठहरे थे और उन्होंने उसे अक्षय रहने का वरदान दिया था सो इसका नाम अक्षयवट पड़ा. किले-प्रांगण में अवस्थित सरस्वती कूप में सरस्वती नदी के जल का दर्शन किया जा सकता है. इसी प्रकार मुगलकालीन शोभा बिखेरता 'खुसरो बाग' जहांगीर के बड़े पुत्र खुसरो द्वारा

गज़ल

वक्त से वक्त को ज़रा चुरा लीजिये।
चेहरे को गुलाब-सा खिला लीजिये।
मत तड़फा करें अँधरों में यूं सनम।
कहकर चॉद से सितारे बुला लीजिये।
मचल रही है मस्त तितलियां बहार में।
आईना नज़रों का ज़रा घुमा लीजिये।
उमड़ने लगे घटायें गमों की जब भी
बंद कपाट यादों से खुलवा लीजिये।
चहक रहा रहस्य उजली उदासी में भी।
प्रिय के मन से तार मन के मिला लीजिये।
सुरभित लटों से बतियाती ये हवायें
माहिर सलीका महक को सिखा दीजिये।

मुखराम माकड़ 'माहिर', राजस्थान

बनवाया गया था. यहॉ बाग में खुसरो, उसकी मॉ और बहन सुल्तानुन्निसा की कब्रें हैं. ये मकबरे काव्य और कला के सुन्दर नमूने है. फारसी भाषा में जीवन की नश्वरता पर जो कविता यहॉ अंकित है वह मन को भीतर तक स्पर्श करती है.

बक्सर के युद्ध-१७६४ बाद अंग्रेजों ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर आधिपत्य कर लिया, पर मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय अभी भी नाममात्र का प्रमुख था. अंततः बंगाल के ऊपर कानूनी मान्यता के बदले ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने शाह आलम को २६ लाख रुपये दिए एवं कड़ा व इलाहाबाद के जिले भी जीतकर दिये. सम्राट को ६ वर्षो तक कम्पनी ने इलाहाबाद के किले में लगभग बंदी बनाये रखा. पुनः १८०१ में अवध नवाब को अंग्रेजों ने सहायक संधि हेतु मजबूर कर गंगा-यमुना दोआब पर कब्जा कर लिया. उस समय इलाहाबाद प्रान्त अवध के ही अन्तर्गत था. इस प्रकार १८०१ में इलाहाबाद अंग्रेजों की अधीनता में आया और उन्होंने इसे वर्तमान नाम दिया.

स्वतंत्रता संघर्ष आन्दोलन में भी इलाहबाद की एक अहम् भूमिका रही. राष्ट्रीय नवजागरण का उदय इलाहाबाद की भूमि पर हुआ तो गॉधी युग में यह नगर प्रेरणा केन्द्र बना. राष्ट्रीय कांग्रेस के संगठन और उन्नयन में भी इस नगर का योगदान रहा है. १८५७ के विद्रोह का नेतृत्व यहॉ पर लियाकत अली ने किया. कांग्रेस पार्टी के तीन अधिवेशन यहॉ पर १८८८, १८९२, १९१० में क्रमशः जार्ज यूल, व्योमेश चंद बनर्जी और सर विलियम बेडरबर्न की अध्यक्षता में हुये. महारानी विक्टोरिया का १ नवम्बर १८५८ का प्रसिद्ध घोषण पत्र यहीं अवस्थित मिण्टो पार्क -अब मदन मोहन मालवीय पार्क में तत्कालीन वायसराय लार्ड केनिंग द्वारा पढ़ा गया था. नेहरू परिवार का पैतृक आवास स्वराज भवन और आनन्द भवन यहीं पर है. नेहरू-गॉधी परिवार से जुड़े होने के कारण इलाहाबाद ने देश को प्रथम प्रधानमंत्री भी दिया. उदारवादी व समाजवादी नेताओं के साथ-साथ इलाहाबाद क्रांतिकारियों की भी शरणस्थली रहा है. चंद्रशेखर आजाद ने यहीं पर अल्फ्रेड पार्क में २७ फरवरी १९३१ को अंग्रेजों से लोहा लेते हुए ब्रिटिश पुलिस अध्यक्ष नॉट बाबर और पुलिस अधिकारी विशेश्वर सिंह को घायल कर कई पुलिसजनों को मार गिराया और अंततः खुद को गोली मारकर आजीवन 'आजाद' रहने की कसम पूरी की. १९१९ के रौलेट एक्ट को सरकार द्वारा वापस न लेने पर जून १९२० में इलाहाबाद में एक सर्वदलीय सम्मेलन हुआ जिसमें स्कूल, कॉलेजों और अदालतों के बहिष्कार के कार्यक्रम की घोषणा हुयी, इस प्रकार प्रथम असहयोग और खिलाफत आंदोलन की नीव भी इलाहाबाद में ही रखी गयी.

वाकई इलाहाबाद इतिहास के इतने आयामों को अपने अन्दर छुपाये हुए है कि सभी का वर्णन सम्भव नहीं. १८८७ में स्थापित 'पूरब का ऑक्सफोर्ड' कहे जाने वाले इलाहाबाद विश्वविद्यालय की अपनी अलग ही ऐतिहासिकता है. देश का चौथा सबसे पुराना उच्च न्यायालय १८६६ जो कि प्रारम्भ में आगरा में अवस्थित हुआ, के १८६९ में इलाहाबाद स्थानान्तरित होने पर आगरा के तीन विख्यात एडवोकेट पं. नन्दलाल नेहरु, पं० अयोध्यानाथ और मुंशी हनुमान प्रसाद भी इलाहाबाद आये और विधिक व्यवसाय की नींव डाली. मोतीलाल नेहरू इन्हीं पं. नंदलाल नेहरू जी के बड़े भाई थे. कानपुर में वकालत आरम्भ करने के बाद १८८६ में मोतीलाल नेहरू वकालत करने इलाहाबाद चले आए और तभी से इलाहाबाद और नेहरू परिवार का एक अटूट रिश्ता आरम्भ हुआ. इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सर सुन्दरलाल, मदन मोहन मालवीय, तेज बहादुर सप्रू, डॉ०

■ *धर्मराज युधिष्ठिर ने यही पर दस यज्ञ किए इसी दशाश्वमेध घाट बना*

■ *अकबर ने संगम तट पर १५८३ ई० में किले का निर्माण कराया.*

■ *१८५७ के विद्रोह का नेतृत्व यहॉ पर लियाकत अली ने किया. कांग्रेस पार्टी के तीन अधिवेशन यहॉ पर १८८८, १८९२, १९१० में क्रमशः जार्ज यूल, व्योमेश चंद बनर्जी और सर विलियम बेडरबर्न की अध्यक्षता में हुये.*

■ *महारानी विक्टोरिया का १८५८ का प्रसिद्ध घोषण पत्र यहीं मिण्टो पार्क में तत्कालीन वायसराय लार्ड केनिंग द्वारा पढ़ा गया था.*

■ *देश का चौथा सबसे पुराना उच्च न्यायालय १८६९ में इलाहाबाद स्थानान्तरित होने पर आगरा के तीन विख्यात एडवोकेट पं. नन्दलाल नेहरु, पं० अयोध्यानाथ और मुंशी हनुमान प्रसाद भी इलाहाबाद आये और विधिक व्यवसाय की नींव डाली. मोतीलाल नेहरू इन्हीं पं. नंदलाल नेहरू जी के बड़े भाई थे.*

सतीशचन्द्र बनर्जी, पी.डी.टंडन, डॉ० कैलाश नाथ काटजू, पं० कन्हैया लाल मिश्र आदि ने इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी. उत्तर प्रदेश विधानमण्डल का प्रथम सत्र समारोह इलाहाबाद के थार्नहिल मेमोरियल हॉल में (तब अवध व उ.प्र. प्रांत विधानपरिषद) ८ जनवरी १८८७ को आयोजित किया गया था.

इलाहाबाद में ही अवस्थित अल्फ्रेड पार्क भी कई युगांतकारी घटनाओं का गवाह रहा है. राजकुमार अल्फ्रेड ड्यूक ऑफ एडिनबरा के इलाहाबाद आगमन को यादगार बनाने हेतु इसका निर्माण किया गया था. पुनः इसका नामकरण आजाद की शहीदस्थली के रूप में उनके नाम पर किया गया. इसी पार्क में अष्टकोणीय बैण्ड स्टैण्ड है, जहाँ अंग्रेजी सेना का बैण्ड बजाया जाता था. इस बैण्ड स्टैण्ड के इतालियन संगमरमर की बनी स्मारिका के नीचे पहले महारानी विक्टोरिया की भव्य मूर्ति थी, जिसे १६५७ में हटा दिया गया. इसी पार्क में उत्तर प्रदेश की सबसे पुरानी और बड़ी जीवन्त गाथिक शैली में बनी 'पब्लिक लाइब्रेरी' १८६४ भी है, जहाँ पर ब्रिटिश युग के महत्वपूर्ण संसदीय कागजात रखे हुए है. पार्क के अंदर ही १६३१में इलाहाबाद महापालिका द्वारा स्थापित संग्रहालय भी है. इस संग्रहालय को पं.नेहरू १६४८ में अपनी काफी वस्तुयें भेंट की थी.

इलाहाबाद की अपनी एक धार्मिक ऐतिहासिकता भी रही है. छठवें जैन तीर्थकर भगवान पद्मप्रभु की जन्मस्थली कौशाम्बी रही है तो भक्ति आंदोलन के प्रमुख स्तम्भ रामानन्द का जन्म प्रयाग में हुआ. रामायण काल का चर्चित श्रृंगवेरपुर, जहाँ पर केवट ने राम के चरण धोये थे, यहीं पर है. यहाँ गंगातट पर श्रृंगी ऋषि का आश्रम व समाधि है. भारद्वाज मुनि का प्रसिद्ध आश्रम भी यहीं आनन्द भवन के पास है, जहाँ भगवान राम श्रृंगवेरपुर से चित्रकूट जाते समय मुनि से आर्शीवाद लेने आए थे. अलोपी देवी के मंदिर के रूप में प्रसिद्ध सिद्धिपीठ यहीं पर है तो सीता-समाहित स्थल के रूप में प्रसिद्ध सीतामढ़ी भी यही पर है. गंगा तट पर अवस्थित दशाश्वमेध मंदिर जहाँ ब्रहमा ने सृष्टि का प्रथम अश्वमेधा यज्ञ किया था, भी प्रयाग में ही अवस्थित है. संगम तट पर लगने वाले कुम्भ मेले के बिना प्रयाग का इतिहास अधूरा है. प्रत्येक बारह वर्ष में यहाँ पर 'महाकुम्भ मेले' का आयोजन होता है, जो कि अपने में एक 'लघु भारत' का दर्शन करने के समान है. कभी प्रयाग का एक विशिष्ट अंग रहे, पर वर्तमान में एक पृथक जनपद के रूप में अवस्थित कौशाम्बी का भी अपना एक अलग इतिहास है. विभिन्न कालो में धर्म, साहित्य, व्यापार और राजनीति का केंद्र बिन्दु रहे कौशाम्बी की स्थापना उद्‌यिन ने की थी. यहाँ पॉचवी सदी के बौद्धस्तूप और भिक्षुगृह है. वासवदत्ता के प्रेमी उद्‌यन की यह राजधानी थी. यहाँ की खुदाई से महाभारत काल की ऐतिहासिकता का भी पता लगता है.

वाकई इलाहाबाद की ऐतिहासिकता अपने आप में अनूठी है. पर इलाहाबादी अमरूद के बिना यह वर्णन फीका ही लगेगा. तभी शायर अकबर इलाहाबादी ने कहा है-

"कुछ इलाहाबाद में सामां नहीं बहबूद के
धरा क्या है सिवा अकबर-ओ-अमरूद के।"

++++++++++++++

कि

एहसास
इस कदर दस्तक देता है
दिल में,
कि
भावनाओं की सैकड़ों कमल
खुद ब खुद खिलने लगता है
मन की
सच, मन की झील में।

मोनिमा चौधरी, आसाम-

काव्य संग्रह, लेख संग्रह आदि हेतु रचनाएं आमंत्रित है

काव्य संग्रह हेतु कवियों से दो रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा 100/—रुपये, निबध संग्रह हेतु दो निबंध जो पांच सौ शब्दों से अधिक का न हो, सचित्र जीवन परिचय सहित 250/—रुपये तथा कहानी संग्रह हेतु दो कहानी जो पॉच सौ शब्दों से अधिक की न हो, तथा सहयोग राशि 250/—रुपये मात्र सहयोग राशि के साथ आमंत्रित है. इन तीनों संग्रहों का विमोचन संस्थान द्वारा आयोजित होने वाले साहित्य मेला—08 के अवसर पर प्रस्तावित है. अपनी रुचि अनुसार इसे 15 जनवरी 2007 के पूर्व भेजें. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें—

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसीः** 9335155949

समाज

जब जामा मस्जिद से वेदमन्त्र गूँजा था!

आर्य प्रहलाद गिरी, पश्चिमी बंगाल

बात ४ मार्च १६१६ की है. विदेशी-दमन के शिकार मुसलमानों की सद्गति हेतु दिल्ली के जामा मस्जिद में प्रार्थना का आयोजन किया गया था. उस समय गाँधीजी के चल रहे असहयोग आन्दोलन में विख्यात समाज सुधारक आर्यसन्त स्वामी श्रद्धानन्दजी अपने निर्मल विचार और निष्पक्ष व्यवहार के कारण स्वामी रामदेव व स्वामी अग्निवेश की तरह दोनों समुदायों के आदर्श पुरुष माने जाते थे. इसीलिए मुसलमानों ने इन्हें जामा मस्जिद में सहर्षादर आमन्त्रित किया था.

तेजस्वी मुखमण्डल के मुण्डित सिर पर गोस्वामी वेश में गेरुआ पगड़ी बांधे एवं गेरुआ वस्त्र पहने आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द हाथ-पैर धोकर मस्जिद में प्रवेश किये. वहाँ हजारों मुसलमान इनके आगमन की प्रतीक्षा उत्सुकतापूर्वक कर रहे थे.

भारत की सबसे बड़ी मस्जिद की प्रधानवेदी (मिम्बर) पर "ला इल्लिाह" (एक ईश्वर ही हम सबका उपास्य है)कहकर महात्मा जी चढ़े. फिर अनेक वेदमन्त्रों को उद्धृत करके बतलाने लगे 'वह अद्वितीय निराकार सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान अनादि अनन्त अखण्ड दयालु सर्वेश्वर सृष्टिकर्ता एक परमात्मा ही हम सभी मनुष्यों का उपास्य है. वही हम सबका माता-पिता, बंध-संखा भी है. सच्चे दिल एवं आचरण से की गयी प्रार्थना ही हमें ईश्वरीय-खुदाई ताकत प्रदान करती है. सन्यासी या फकीर हो जाने के बाद मनुष्य हिन्दू-मुसलमान की रेखाओं के ऊपर उठकर हर मनुष्यों का हितचिन्तक हो जाता है. अतएव हम सभी प्रभु के प्रिय सन्तान एक साथ इस पवित्र उपासनालय में प्रभु से प्रार्थना करते है कि हम सबमें परस्पर कल्याणकारी सद्भावना बनी रहे. हमारे कोई भी भाई परमपिता परमात्मा के पावन-पथ से कभी विचलित न हों. शैतान के लाखों भय अथवा प्रलोभनों को नजरन्दाज करते हुए हम खुदा के राह पर एक साथ प्रेमपूर्वक बढ़ते रहें. खुदा हाफिज, ओऽम् शान्ति! शान्तिः!शान्ति!

सचमुच वह दिन मजहबी एकता के इतिहास में अविस्मरणीय दिन था. वैसे, तैमूर लंग के आक्रमण को रोकने के लिए १३६८ ईं० में भी हिन्दुओं के इसी उपासनागृह मस्जिद भी आर्यग्राम (आगरा का पुराना नाम) के तेजो महालय की तरह मन्दिर ही था.

चूँकि यह भी सत्य है कि नानक कबीर गांधी की भाँति दोनों समुदायों में आजीवन एक ही प्रभु का भक्तिरस पिलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या उसी ने की जिस पर ये कानपुर के सुख्यात पत्रकार गणेशशंकर विद्यार्थी जी की तरह किये थे.

भारतीयता के पक्ष में शुद्धि आन्दोलन के साथ-साथ साम्प्रदायिक सौहार्द्ध के लिए आजीवन साधनारत गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के इस महान संस्थापक को इनके ही निवास, दिल्ली में वैदिक ज्ञान लेने के बहाने इब्राहिम नामक युवक २३.१२.१६२६ को आया और छाती में छुरा से प्रान लेकर भाग गया.

साभारःअयोध्या संवाद साप्ताहिक

निकनेम है याहू

Yahoo.com साइट के बारे में तो सबने खूब सुना होगा. दरअसल याहू का नाम ही इतना कैची है कि लगता है प्रचार के लिहाज से इस इस नाम को चुना गया होगा. पर यह सच नहीं है. याहू साइट की स्थापना अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में पीएचडी कर रहे दो छात्रों डेविड फिलो और जैरी यांग ने 1994 में की थी. यह बेवसाइट 'जैरी ऐंड डेविड्स गाइड टु द वर्ल्ड वाइड वेब' के नाम से शुरू हुई थी. लेकिन फिर उसे एक नया नाम मिला. यह नाम था, 'यट एनअदर हाइरार्किकल ऑफिशियल ओरेकल'. इसका संक्षिप्त रुप बनता है याहू. जैरी और डेविड ने इसकी शुरुआत अपनी व्यक्तिगत रुचियों के लिंको के एक गाइड के रुप में की थी. लेकिन फिर वह बढ़ती चली गई. फिर उन्होंने उसे श्रेणीबद्ध करना शुरू किया. कुछ ही समय में उनके विश्वविद्यालय के बाहर भी लोग इस साइट का प्रयोग करने लगे. अप्रैल 1995 में सैकोया कैपिटल कंपनी की माली मदद से याहू को एक कंपनी के तौर पर शुरू किया गया. इसका मुख्यालय कैलिफोर्निया है.

खुलासा

बी.ए.एम.एस.,बी.यू.एम.एस डाक्टर सावधान!

नई दिल्ली, १६ अगस्त ०७ को भारत की सर्वोच्च उपभोक्ता परिषद ने एक महत्वपूर्ण फैसला देते हुए यह घोषित किया गया कि बी.यू.एम.एस. उपाधि के आधार पर जूनियर डॉक्टर के रूप में भी ऐलोपैथिक चिकित्सा नहीं कर सकता. ज्ञात रहे कि हंस अस्पताल, मुखर्जी नगर, नईदिल्ली में एक जयदेव नाम के व्यक्ति का इलाज करते समय मृत्यु हो गई थी. उस व्यक्ति का इलाज विशेषज्ञ डॉ. कपिल सूद-एम.डी मैडिसन व डॉ. एच.के.सिंह इएनटी विशेषज्ञ द्वारा किया जा रहा थ. परन्तु जूनियर डॉक्टर रेहान के पास दिल्ली विश्वविद्यालय की बी.यू.एम.एस की डिग्री थी और वह दिल्ली बोर्ड से पंजीकृत भी था, परन्तु उसकी उपाधि व पंजीयन को सर्वोच्च माननीय न्यायाधीश एस.एन.कपूर व श्रीमती राज्य लक्ष्मी राव ने एलोपैथी प्रेक्टिस के लिए अवैध माना और कहा कि बी.यू.एम.एस डाक्टर अन्य सीनियर डाक्टर द्वारा प्रेसक्राइवड औषधियों को भी रोगी पर उपयोग नहीं कर सकता. यह फैसला सम्पूर्ण भारत में लागू हो चुका है. इसलिए बी.ए.एम.एस एवं बी.यू.एम.एस. डाक्टर सावधान हो जाए. प्राईवेट अस्पताल व नर्सिंग होम जिन्होंने उपरोक्त उपाधि-धारक डॉक्टरों को अपना जूनियर रखा हुआ है. वह इस फैसले को अवश्य पढ़े एवं जागरूक रहे.

डॉ० रेहान ने आयुष के सभी विभागों में आपकी इस व्यथा को सुनाया है और उनसे मदद की मांग की है. यदि कोई भी डाक्टर जो किसी मेडिकल केस में फंसे है डॉ. अनिल गुप्ता अवैतनिक सचिव अखिल भारतीय आयुर्वेद संध एवं एडवोकेट, दिल्ली हाईकोर्ट से ९८११४४६१२४ पर निःशुल्क परामर्श ले सकते है.

डॉ० वी०के० खुल्लर, नई दिल्ली

राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सा परिषद बिहार ने वैद्यों के पंजीकरण रद्द किए

नई दिल्ली, राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सा परिषद, बिहार ने अपने एक आदेश द्वारा १९६७ के बाद वैद्य विशारद/आयुर्वेद रत्न व कई अन्य केन्द्र द्वारा अमान्य उपाधियों के आधार पर पंजीकृत वैद्यों के पंजीकरण रद्द कर दिए है. बिहार के सरकारी गजट में भी १९६७ के बाद के पंजीकृत वैद्यों के नाम नहीं है. इससे पूर्व मुम्बई हाईकोर्ट भी १९६७ के बाद के बिहार के पंजीकृत वैद्य की प्रेक्टिस पर रोक लगा चुका है. यद्यपि मुम्बई हाईकोर्ट के फैसले के विरुद्ध आयुर्वेद स्नातक संघ द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर कर दी गई है जो कि विचारार्थ स्वीकार कर ली गई है.

हि.प्र. एवं उ.प्र. ने तो १९६७ के बाद वैद्य विशारद/ रत्न के आधार पर पंजीकरण ही नहीं किए थे. ऐसा भी सुनने में आया है कि अब म.प्र. पंजाब, हरियाणा आदि राज्य बोर्ड भी १९६७ के बाद के पंजीकरणों को रद्द करने जा रहा है. वैसे तो यह प्रकिया सन् २००० में भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद ने अपने एक आदेश सं. एफ.नं.६-२८/२००० दिनांक ४.०४.२००० द्वारा शुरू कर दी थी. आदेश की प्रति अखिल भारतीय आयुर्वेद सेवा संघ रिषी नगर, दिल्ली-३४ से निःशुल्क मंगवाई जा सकती है. सुप्रीम कोर्ट, भारत सरकार एवं भारतीय चिकित्सा परिषद, नई दिल्ली केवल १९६७ तक ही मान्यता देता है.

अब प्रश्न उठता है कि राजकीय आयुर्वेद एवं युनानी चिकित्सा परिषद, बिहार, म.प्र. राजस्थान आदि राज्य परिषदों के १९६७ के बाद पंजीकरण का उत्तरदायित्व किस पर होगा? अब इन्हें अमान्य करार दे दिया गया है. इसलिए ध्यान रहे कि थोड़ी सी कमाई के चक्कर में न्यायालय द्वारा अपराधी घोषित किया जा सकता है.

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. २. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ५. यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६. धनादेश 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

साहित्य समाचार

समाज सेवीः डॉ. अनवार अहमद के जन्म दिवस पर कवि सम्मेलन एवं समारोह आयोजित

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के तत्वावधान में, निशा ज्योति संस्कार भारती, विद्यालय, नैनी में सुप्रसिद्ध समाज सेवी एवं निदेशक जहाँगीर मेमोरियल, के ५१वें जन्म दिवस के अवसर पर सम्मान समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री डी.पी. उपाध्याय, सहायक महाप्रबंधक, नागर विमानन प्राधिकरण थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता छोटे पर्दे के कलाकार श्री वी.पी.सागर ने किया.

मां सरस्वती के माल्यार्पण के पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा डॉ. अनवार अहमद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित पुस्तक 'एक अद्भूत व्यक्तित्व' का विमोचन किया गया. इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सपना गोस्वामी, व मोहित गोस्वामी ने माल्यार्पण कर डॉ. साहब को जन्म दिवस की बधाई दी. श्री वी.पी.सागर, डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय, ईश्वर शरण शुक्ल ने काव्य में बधाई दी.

मुख्य अतिथि श्री डी.पी.उपाध्याय ने डॉ. अनवार को बधाई देते हुए कहा-'वास्तव में डॉ. अनवार अहमद एक फरिश्ता के रुप में है, यह बात उनके कार्यो से सिद्ध होती है. संस्थान द्वारा उनका जन्म दिवस मनाकर एक उल्लेखनीय कार्य किया गया है.'

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सागर साहब ने कहा-'मैं तो डॉ. साहब को पिछले २० सालों से जानता हूँ. कभी इन्होंने किसी का दिल नहीं दुखाया, हमेशा दूसरों के सहयोग के लिए तत्पर रहे हैं.'

एडवोकेट वेद प्रकाश मिश्र ने कहा-'आर्थिक संकट में दूसरों के साथ खड़े डॉ० साहब ने कभी परवाह नहीं की कि दूसरों को आर्थिक संकट से उबारने के लिए उन्हें खुद को गिरवी रखकर महाजनों से ब्याज पर रूपये उधार लिए.

संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर द्विवेदी ने

कहा-मुझे आज तक ऐसा कोई डॉक्टर सुनने व देखने को नहीं मिला जो किसी गरीब मरीज को केवल दवा के खर्चे पर ऑपरेशन करा दें, दवा के पैसे में भी छूट दे दें. आपका अस्पताल में तो इलाहाबाद के कोने-कोने से मजदूर, रिक्शे-ट्राली वाले मात्र इसलिए इलाज कराने आते है कि यहां कम से कम पैसे में अच्छा इलाज हो जाएगा. पैसा नहीं भी है तो मरीज मात्र पैसे के लिए मरेगा नहीं.'

इस अवसर पर श्री रामलोचन सांवरिया, राजेन्द्र शुक्ल, नायाब बलियावी को साहित्यिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए तथा सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं युनाइटेड भारत हिन्दी दैनिक इलाहाबाद के यमुनापार प्रभारी श्री राजीव कुमार वर्मा को पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया.

इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में राजेन्द्र शुक्ल ने कहा-बच्चे हैं तकदीर देश के, बच्चे तरसे रोटी को कहीं सुसज्जित ठाठ बाट है, तरसे कहीं लगोंटी को।

यमुनापार के कवि रामलोचन संवरिया ने कहा-हर कोई अपने ईमान का होता है मुसलमान। जो उसके ईमान पर चलता उसे कहूँ इंसान।।

जीतेन्द्र कुमार जीतू ने कहा-आप बीती कहानी बताओगे क्या,मेरी आंखो का पानी छलकाओगे क्या।

ईश्वर शरण शुक्ल ने भ्रष्टाचार को रेंखांकित करते हुए कहा-दिल्ली से हंसकर चला, निर्धन का अनुदान।राहों में ही लुट गया, फूल गये प्रधान।

जनाब वी.पी.सागर ने काव्य पाठ करते हुए कहा-घर के सम्मुख पेड़ हरा था, सूख गया क्यों सूख गयां सदियों से उन्मुक्त खड़ा था सूख गया क्यों सूख गया।

डॉ. अनवार अहमद ने कहा-नहीं कोई मंजिल नहीं है सहारा, खुदा है हमारा, खुदा ई हमारा। नहीं डर है कोई, ज़माने के बद का, खुदा है हमारा खुदा है हमारा।

एक तरफ श्री डी.पी.उपाध्याय ने जनरल बोगी की यात्र सुनाकर श्रोताओं की वाहवाही लूटी तो नायाब बलियावी ने मॉ और वतन नामक कविता से श्रोताओं के दिल को छुआ.

कार्यक्रम का संचालन गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने तथा आभार ईश्वर शरण शुक्ल ने ज्ञापित किया. इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक व कार्यसमिति सदस्य श्री राजकिशोर भारती, विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सपना गोस्वामी, मोहित गोस्वामी, वेद प्रकाश मिश्र, श्रीमती डी.पी.उपाध्याय सहित स्थानीय इलेक्ट्रानिक एवं प्रिंट मीडिया के पत्रकार उपस्थित थे.

न मंजिल का पता है, न रास्ते का पता
ऊपर से जिंदगी बे लगाम
खुदा जाने कहॉ ले जा रही है मेरी
जिंदगी मुझको **सत्येन्द्र यादव**

♣ जैसे कल ही की तो बात है, जब मैंने होश संभाला था आज जीवन समाप्ति पर है. मैं भौचक्का सा हूँ कि कैसे इतने सारे वर्ष पल भर में व्यतीत हो गये? सभी आकांक्षाए वैसी की वैसी ही धरी रह गई. बस, क्या यही है जिंदगी?

♣ बड़ा खानदान, भरा पूरा परिवार, ऊँची हवेली, धन-दौलत, मान-सम्मान. कभी इन सब पर बड़ा नाज था मुझे. काल की गति ने सब कुछ छीन लिया. अब तो शरीर भी साथ छोड़ रहा है. परदेस में लुटे हुए मुसाफिर जैसा अब मैं क्या करूँ?

♣ बड़े-बड़े स्वप्न देखता था मैं बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाई. ये करुंगा, वो करुंगा. बड़ा सयाना समझता था मैं अपने आपको. परन्तु भाग्य के आगे एक न चली. अब तो योजनाए बनाने का साहस तक जा चुका है. कल की कौन जाने सोचता हूँ. आज का दिन जी लूँ-बस इतना ही काफी है.

♣ बचपन से ही पढ़ने का व्यसन था. जैसे-जैसे पढ़ना-लिखना और मनन करना बढ़ता गया,मैं संसारियों की भीड़ से अलग होता चला गया. अब मैं इतना अकेला हो चुका हूँ कि हे भगवान, मैं किससे बात करुँ?

♣दिन रात पढ़ा, यहां तक कि पढ़ते-पढ़ते ऑखे खराब हो गयी. देश के एक छोर से दूसरे छोर तक घूमा, यहॉ तक कि थक गया. बड़े-बड़े महापुरुषों से मिला परन्तु मेरी ज्ञान पिपासा शांत नहीं हुई. जब कभी किसी अनपढ़, मस्त गंवार आदमी को देख लेता हूँ, तो अपने ऊपर तरस आने लगता है-मेरा विशाल ज्ञान भण्डार आज मेरे किस काम का?

८ अक्टूबर २०३१ को अपनी सौंवी वर्षगांठ पर

विदाई बेला

✍ **सत्येन्द्र यादव,** आगरा

♣ कुदरत ने धीरे-धीरे एक के बाद एक लुभावनी चीजें देकर किस खूबी से मुझे संसार में फँसा लिया. जब मै पूर्णतः जकड़ गया तो फिर एक-एक करके उन्हीं चीजों को किस बेरहमी से छीनना शुरू कर दिया. मैं कुछ कर भी तो नहीं सकता. कुदरत भी कितनी क्रूर है.

♣ जब मेरे पास सब कुछ था, तो मेरे बहुत से दोस्त और नातेदार था. जब सब कुछ चला गया तो, वे दोस्त और नातेदार भी साथ छोड़ गये। लगता है वे सब भी उन्हीं चीजों के साथी थे-मेरा साथी कोई नहीं।

♣सब चले गये. एक टूटीर खाट, गंदा बिस्तर, फटे कपड़े और कुछ दवाओं की शीशियॉ-बस अब यही मेरे साथी बचे है. मरने पर शायद नया कफन मिले! कुछ लोग अन्तिम विदाई के लिए तो आयेंगे ही.

♣चलने का समय हो चुका है, सिर्फ बुलावे की देर है. सोचता हूँ क्या-क्या मेरा साथ जायेगा? गाड़ी के इंतजार में स्टेशन पर बैठे हुए एक मुसाफिर की सी निश्चिंतता ही मेरा सम्बल है. अब शिकायत कैसी? और किस से?

♣उस पार पहुँच कर कौन-कौन मिलेगा? कोई मिलेगा भी या नहीं? शायद नहीं. लगता है, मैं हमेशा से अकेला था, आज भी अकेला हूँ, और वहॉ भी अकेले ही रहना है. अब आशा किससे? और क्यों. खुदा हाफिज.

++++++++++++++++++++

आजादी के सवक परिन्दों से सीखा मैंने कभी मन्दिर पर जा बैठे तो कभी मस्जिद पर जा बैठे, कभी गुरुद्वारे पर जा बैठे तो कभी चर्च पर जा बैठे. कभी इस सत्संग में जा बैठे तो कभी उस सत्संग में जा बैठे. कभी इस कथा में जा बैठे तो कभी उस कथा में जा बैठे. कभी श्मशान में जा बैठे, तो कभी कब्रिस्तान में जा बैठे, कभी यहॉ जा बैठे, तो कभी वहॉ जा बैठे. जब भी मन हुआ, जहॉ भी मन हुआ, जा कर बैठ गये. काश, मैं भी एक आजाद परिन्दा होता!

मत-मतान्तरों के पिंजरों में कैद परिन्दे,
आजादी का सुख भला क्या जाने?

इस दुनिया के घोसलें में जिन्दगी शुरु की थी मैंने भी. पंख उग आये, तो घोंसले को अलविदा कर दिया है मैंने. अब तो खुले आसमानों में, अकेले एक आजाद पंछी की तरह उड़ना अच्छा लगता है मुझे. दुनिया का कोई भी बहेलिया अब मुझे पकड़ नहीं सकता. **सत्येन्द्र यादव**

किसे कितनी तोपों की सलामी

तोपों से सलामी की शुरुआत चौदहवीं शताब्दी में तोपों के इस्तेमाल के साथ ही हुई थी. उस समय नौसेना की प्रथा के अनुसार हारी हुई सेना से अपना गोला-बारुद खाली करने की मांग की जाती थी, ताकि वह फिर से उसका इस्तेमाल न कर सके. जहाजों पर सात तोपें हुआ करती थीं, क्योकि सात की संख्या को शुभ माना जाता है और चूंकि समुद्र के मुकाबले धरती पर ज्यादा बारूद रखा जा सकता था, इसलिए जहाज की एक तोप के मुकाबले किनारे से तीन तोपें दागी जाती थी. इस तरह सात गुणा तीन हुआ इक्कीस. इस तरह शुरूआत हुई इक्कीस तोपों की सलामी की. तोपों की सलामी देश का सर्वोच्च सम्मान समझा जाने लगा. ब्रिटिश सम्राट को १०१ तोपों की सलामी दी जाती थी, जबकि अन्य राजाओं को २१ या ३१ तोपों की सलामी. फिर ब्रिटेन ने तय किया कि अंतरराष्ट्रीय सलामी २१ तोपों की ही होनी चाहिए. अमेरिका में भी २१ तोपों की सलामी की प्रथा है.

१४ अक्टूबर को ६६वें जन्म-दिन पर विशेष

पवन चौधरी 'मनमौजी': एक दुर्लभ साहित्यकार

✍प्रो० लालचन्द गुप्त'मंगल'कुरुक्षेत्र

हरियाणा साहित्य अकादमी सहित अनेकानेक राज्यीय-राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित-अभिनन्दित श्री पवन चौधरी 'मनमौजी' उस वर्ग के रचनाकार नहीं है, जिन्हें सामान्यतया, साहित्य-सर्जक कहा जा सकता है. उन्हें शौकिया लेखक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उनके लेखन में एक तरह की भीतरी लाचारी प्रकट होती है. लिखने की एक बलवती प्रेरणा, जो शौक से कुछ-अधिक होती है. बकौल, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', 'पवन चौधरी एक ऐसे लेखक है, जिन्हें वकील होते हुए भी इन्साफ़ की चिन्ता है.' 'मनमौजी' की इसी विशिष्टता-विलक्षणता को रेखांकित करते हुए डॉ० कमलकिशोर गोयनका ने लिखा है कि-पवन चौधरी हिन्दी के ऐसे दुर्लभ साहित्यकार है, जिनकी कोई परम्परा नहीं मिलती और न हीं भविष्य में उनके साहित्य-मार्ग पर चलने का कोई इन जैसा वकील दुस्साहस कर सकता है.' एक अंतरंग वार्तालाप में उन्होंने खुले दिल से मेरे सामने यह स्वीकार किया था कि उनकी तीन बीविया है. नगीना, शौकीना और हसीना. नगीना उनकी वकालत है, शौकीना लेखन और हसीना अध्यापन. हरियाणा के प्रथम सूर-पुरस्कार विजेता प्रोफ़ेसर हरिश्चन्द्र वर्मा की दृष्टि भी 'मनमौजी' की इन बीवीयों पर पड़ी है, तभी तो वे 'मनमौजी' को एक अनुभवी-प्रबुद्ध अधिवक्ता, समर्थ-लेखक और समर्पित-अध्यापक मानते है. निस्संदेह, असीम अनुभव-प्रबुद्ध अधिवक्ता, समर्थ-लेखक और समर्पित-अध्यापक

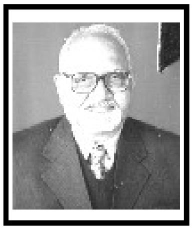

मानते हैं. निस्संदेह, असीम अनुभव-राशि के स्वामी 'मनमौजी' में एक ख्यातिनामा साहित्यकार की सभी प्रातिभ अर्हताएँ, अपनी सर्वांगीणता के साथ, विद्यमान हैं.

स्वयं को हरियाणा का नागरिक और दिल्ली का निवासी स्वीकारने वाले पवन चौधरी का जन्म १४ अक्तूबर १६४१ ई. को, कैथल में हुआ था. अपनी सातवीं तक की शिक्षा क्रमशः हिन्दू हाई स्कूल, कैथल तथा मुकुन्दलाल स्कूल, यमुनापार से ग्रहण करने के उपरान्त, आप अपने माता-पिता के साथ ही, दिल्ली चले गये और मां-बाप पर आर्थिक बोझ बने बिना, स्वार्जन के बल पर, एम.ए. (अर्थशास्त्र), एल. एल.बी. की उपाधियां अर्जित की. अगस्त १६७० से आप वकालत कर रहे है. इस बीच सर्वोच्च न्यायालय में एडवोकेट आन रिकार्ड १६७४ है. नोटरी, केन्द्रीय सरकार (१६६७-२०००) बने और, आदतन, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा इण्डियन लॉ इंस्टीट्यूट सहित अनेक महाविद्यालयों-विश्वविद्यालयों में विधि-शिक्षण किया तथा फाइनेंशियल एक्सप्रेस-दिल्ली, और बिजनेस स्टेण्डर्ड-कलकत्ता के विधि-संवाददाता रहे. न-जाने कितने मंत्रालयों/संस्थानों के सदस्य/सलाहकार रहे. आकाशवाणी और दूरदर्शन के 'सामयिकी' एवं चौपाल सरीखे स्थायी मंचो पर, वर्षो तक, अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करवायी. कुल मिलाकर, हमेशा मन की मौज ही हावी रही. कभी किसी दबाव में आकर कोई काम नहीं किया. जब जी चाहा, परिणाम की चिन्ता किये बिना, 'आयी मौज फक़ीर की, किया झोपड़ा फूँक'. सन् १६६१ में 'मनमौजी' की कलम-डाली पर एक साथ तीन फूल खिले.. दो लेख (सबसे बड़ा स्टूडियो, हम सब ड्राईवर है.) और एक कहानी (नया मैनेजर). तब से लेकर आज तक चौधरी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा. अपनी लगभग पचास वर्षो की लेखन-यात्रा में आपने सांस्कृतिक एवं विधिक विषयों पर, हिन्दी और अंग्रेजी में, अगणित लेख लिखे, दैनिक ट्रिब्यून में कानून-कचहरी सरीखे अनेक स्थायी स्तंभ लिखे, भारत के प्रधान न्यायाधीश सहित प्रायः सभी क्षेत्रों की प्रमुख हस्तियों और अति-साधारण व्यक्तियों

चरित्र सुधर जाएगा

एक समाजसेवी ने एक शरारती युवक को समझाते हुए कहा, देखो, यदि तुम प्रत्येक लड़की को अपनी मां समझोगे तो तुम्हारा चरित्र सुधर जाएगा. युवक ने एक लम्बी सांस भरकर जवाब दिया, मेरा चरित्र तो सुधर जाएगा लेकिन मेरे पिताजी का चरित्र.

अकल भी तेज होती है

फेरीवाला-चाकू, छुरियां तेज करा लो.
महिला-क्योंजी, अक्ल भी तेज करते हो?
फेरीवाला-हॉ बहन जी, अगर आपके पास हो तो....?

के साक्षात्कार लिये. देश की शायद ही कोई पत्र-पत्रिका हो, जिसमें मनमौजी न छपे हों. विधि एवं साहित्य के मणि-कान्चन संयोग का पर्याय बन चुके हरियाणा के इस धन्ना सेठ के खज़ाने में आज लगभग तीस ग्रन्थ संगृहीत है. इनमें अंग्रेजी में रचित सात कृतियों तथा सम्पादित पच्चीस कृतियों के अतिरिक्त, हिन्दी में ६ व्यंग्य संग्रह, ३ निबन्ध संग्रह, ३ उपन्यास, ०१ संस्मरण, ०१ जीवनी, ०१ कहानी संग्रह, ०१ निजी सूक्तिकोश, २ लघुकथा संग्रह और छोटे हाथःबड़े हाथ, नामक आत्मकथा-दो भाग गण्य है. इस प्रकार, कोई विधा बची हीं नहीं, जिस पर 'मनमौजी' की कलम सरपट न दौड़ी हो. यही कारण है कि सर्वश्री 'अज्ञेय', विष्णु प्रभाकर, विजयेन्द्र स्नातक, एस. सहाय, उपेन्द्र बख्शी, हरिश्चन्द्र वर्मा और कमल किशोर गोयनका सरीखे प्रतिष्ठित विद्वानों ने आपकी साहित्य-सेवा की भूरि-भूरि प्रशंसा की है. अभी, ६६वें जन्म दिन के अवसर पर प्रकाशित उनकी निबन्ध-पुस्तक ...'कानून हाज़िर है'.... की भूमिका में वरिष्ठ पत्रकार और 'हिन्दुस्तान' के पूर्व-सम्पादक श्री विनोद कुमार मिश्र द्वारा व्यक्त किये गये विचार अवलोकनीय है-'उन्होंने सही मायने में साधना की है. उनके आलेखों में उत्तरोत्तर परिपक्वता का बोध होता है. उनका प्रभाव पड़ता है. श्री चौधरी की लेखनी व्यवहारवादी होते हुए भी व्यवस्था की अनैतिकता से समझौता करने के लिए कतई तैयार नहीं है. ऐसे लेखन से ही सुधार और बदलाव की संभावनाओं को बल मिलता है.' उल्लेखनीय है कि 'मनमौजी' ने अपने लेखन का जो विशाल स्कोर खड़ा किया है, उस पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में अब तक एम. फिल-हिन्दी उपाधि हेतु दो तथा पी. एच.डी उपाधि हेतु एक शोध-प्रबंध-व्यंग्यकार मनमौजीःवस्तु और शिल्प, सफलतापूर्वक लिखे जा चुके है. कहने को तो 'मनमौजी' को मैं दो दशकों से जानता हूँ, लेकिन क्या सचमुच अब तक मैं उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के समस्त पहलुओं को जान पाया हूँ? नहीं. उनका तो यहाँ संकेत-भर करना भी मुश्किल है. बस, मैं तो कायल रहा हूँ उनकी प्रभावशाली सरलता-सहजता का, उनकी प्रशसंनीय संवेदनशीलता-स्वाभिमानता का. कानून और कलम के प्रति ईमानदारी-वफ़ादारी तथा निष्पक्षता-निडरता के तो कहने ही क्या! 'मनमौजी' के सम्बंध में अब-तक बहुत-कुछ लिखा कहा गया है, आगे भी बहुत-कुछ लिखा कहा जायेगा. आज उस पर विस्तारपूर्वक लिखने का अवसर नहीं है, क्योंकि इसी महीने के १४वें दिन उनका जन्म-दिन है. आज तो 'जन्म दिन मुबारक हो' कहकर ही स्वंय को संतुष्ट कर लेना बेहतर होगा. नैतिकता को सर्वश्रेष्ठ, कानून को सर्वोपरि तथा साहित्य को समाज की मूँछ मानने वाले 'मनमौजी' इसी प्रकार माँ भारती के भण्डार को भरते रहे, यही कामना है.

लम्बी 'बहर' के तीन मुक्तक

परिन्दे ज़िद पे आ ज़ायें, तो क्या 'औकात' आँधी की;
सुना है, रुख़ हवाओं का, वो अक्सर मोड़ देते है।
बहुत मज़बूत होता है, क़लेजा पत्थरो का पर,
सुना है अश्क के 'छौने' उन्हें भी तोड़ देते हैं।
समय की नब्ज पर उँगली, टिका कर आप भी देखें,
लगे गा फिर 'महाभारत' का शकुनी अपनी ज़िद पे है।
ज़हन के कोने दर कोने में, जंगल है बबूलों के,
खुदा जाने उसूलों को, कहाँ हम छोड़ देते है।।
परिन्दे ज़िद पें आ जाये.......।।

उठेगा प्रश्न 'रोटी' का तुम्हारे सामने जिस दिन,
कई तट-बंध साहस के, तुम्हारे टूट जायेंगे।
करेगा खुदकुशी जिस दिन, कोई पौधा हथेली पर,
सभी आदर्श और संयम, तुम्हारे छपटायें गें।
लिखेगी भूख चेहरे पर, शिकन की दास्ताँ जिस दिन,
कई मंजर हक़ीक़त के, बदल जायें गे दहशत में
कोई नन्हा फ़रिस्ता जब पढ़ेगा चाँद की रोटी।
'सितारे' नभ से टूटेगें, गिरेंगे तड़फड़ाये गें।
उठेगा प्रश्न रोटी का...............।

सलवटें माथे की अक्सर, लोग गिन लेते हैं पर,
दिल का टूटा आइना कब, कौन जाने है यहाँ।
राज़-ए-गम़, कम्बख़्त आँखें, कह तो जाती है मगर,
आसुओं का छटपटाना, कौन जाने है यहाँ।
फ़ातिहा पढ़ कर, मज़ारों पर दुआ करते हैं लोग
'रूह' का करवट बदल पाना, महज एहसास है।
पत्थरों के जिस्म पर कुछ दाग दहशत के भी है
फूल का पत्थर उठाना, कौन जाने है यहाँ।।
दिल का टूटा आइना कब....

संकटा प्रसाद श्रीवास्तव 'बन्धुश्री', लखनऊ-३

ग़ज़ल

ये दिन को रात बताती क्यों?
कि सियासत झूठी चलाती क्यों?
बीत गया जब सावन सूखा
बदली बूँदें टपकाती क्यों?
भाग चुका जब दुल्हा राजा
फिर आए है बाराती क्यों,
सुबह का भुला क्या लौटेगा,
फिर शाम को याद सताती क्यों?

अक्षय गोजा, जोधपुर,राजस्थान

कहानी

मरीचिका

✍ **पुष्पा रघु,** गाजियाबाद

तीन-चार महीने के प्रवास के बाद घर लौटी तो देखा धूल-धक्कड़ और जालों के जाल के साथ बरामदे में लगे छोटे से लैटर-बॉक्स से झांकते कुछ पत्र भी प्रतीक्षा कर रहे थे. सम्पादकों-प्रकाशकों के पत्रों के अतिरिक्त दो स्वस्थ लिफाफे भी थे-उत्तरांचल से प्रेषित. सोचा कहानियॉ वापिस आई होगी, पर नहीं! ये तो कान्ता और चन्द्रा के पत्र है! आज के युग में मित्र-सम्बन्धियों के पत्र तो दूरभाष सुविधा के कारण गूलर का फूल हो गए है. उत्कंठित हो खोला, यह पत्र चन्द्रा का था. लिखा था-

प्रिय दीदी,

नमस्कार

आशा है आप सदैव की भांति प्रसन्न एवं स्वस्थचित्त होगी. बहुत दिनों से आपको लिखने की सोच रही थी क्योंकि एक आप ही तो हैं जिनसे दिल खोल कर सब कुछ कहा जा सकता है. आजकल मैं विचित्र भँवर में फंसी हूँ. कान्त ने समस्याओं का पहाड़ खड़ा कर दिया है. आप से क्या पर्दा है/ जब हम आपके साथ बी.एड. कर रहे थे आप तभी हमारे सम्बन्धों की तह तक पहुंच गई थी. आपने हम दोनों को जोड़ कर नाम दिया था-चन्द्रकान्त. आप कक्षा में सबसे बड़ी, समझदार तथा सबकी हमदर्द थी. सभी आप पर विश्वास करते अपनी उलझनें बता कर समाधान करवाते. फिर एम.एड. में भी हमें आपका स्नेहभरा साथ एवं सिर पर हाथ मिल गया. हमने आपको बताया ही था कि बाल्यकाल से ही हमारा हर पल का साथ रहा है. मैं और कान्त कभी भी एक दूसरे से विलग नहीं रहे, हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी दूर होने की. हमारे इस साथ में व्यवधान पड़ा था मेरे विवाह से पर विधि को भी हमारा विछोह स्वीकार नहीं था शायद.

विवाह को सवा सल भी न हुआ था कि मैं बीस दिन के अंश को गोद में उठाए, तिरस्कृत-अपमानित खोटे सिक्के सी उस पितृगृह में लौट आई जहॉ कभी भी मेरी आवश्यकता न थी. उस टूटने की घड़ी में कान्त ने मुझे अमूल्य मोतियों की माला की भांति समेटा व सहेजा था. सच में ही मैं कान्त के प्रेम के कारण फिर से सामान्य होकर जीवन धारा से जुड़ गई थी. मुझे लगा ही नहीं कि मैंने कुछ खोया है. परिवार वालों ने दूसरे विवाह करने का प्रस्ताव रखा तो मैंने दृढ़ता से मना कर दिया. पुरुष-मात्र से घृणा हो गई थी मुझे, जिनके समक्ष शरीर तथा शारीरिक सौंदर्य के अतिरिक्त सब तुच्छ है. दूसरे मैं अंश के साथ वह नहीं होने देना चाहती थी जो मेरे साथ हुआ था-मैं अपनी मॉ के पहले पति की संतान हूं. सदैव उपेक्षा का विष ही तो पिया है मैंने.

आपको तो विदित ही है कि एम.एड. करने के पश्चात मुझे यहॉ के इंटर कालिज में नियुक्ति मिल गई. परित्यक्ता होने का लाभ मिला है यह. कान्त के लिए एक कोचिंग सेन्टर खोल दिया जो खूब अच्छा चल रहा है. सारी सुख-सुविधाएं, अच्छा-खासा घर सब कुछ है हमारे पास. हम दोनों भी एक साथ, पास-पास है. पर नहीं है तो चैन और संतोष. कान्त का तो जैसे सोच ही बदल गया है. मुझे लेकर पोजेसिव तो वह पहले से ही है. और किसी से संपर्क रखने, हंसने-बोलने की तो छोड़िए, अंश का मेरे पास सोना, मेरा उसे दुलारना, प्यार करना भी सहन नहीं है उन्हें. अब आप ही बताइये कॉलिज जाने के लिए ढंग के वस्त्र पहनना तैयार होना आवश्यक नहीं है क्या? उनका क्या है! खद्दर के कुर्ते पायजामें धोये-सुखाए पहन लिये. मैं कालिज में लेक्चरर हूँ, चपरासिन नहीं कि घिसी बदरंग साड़िया पहन पहुंच जाऊं.

मैंने बी.एड. के दौरान भी आपको अपनी कुछ कविताएं दिखाई थी. अब मेरी घुटन कागज पर उतर कर कुछ पत्र-पत्रिकाओं में पहुंचने लगी है. यहॉ की काव्य गोष्ठियों में मुझे ससम्मान आमन्त्रित किया जाने लगा है. कान्त को यह बिल्कुल सहन नहीं होता. कहना प्रारम्भ कर दिया-मुझे तो आया समझ लिया है. खुद तो तितली बनी जहॉ-तहॉ उड़ती फिरती है, मैं घर भी संभालू और तुम्हारे बेटे को भी. मुझ से नहीं होगा यह सब.

मैंने अंश को होस्टल में भेज दिया. परन्तु असली समस्या तो अब प्रारम्भ हुई है. हुआ यूं दीदी की एक दिन रात के बारह बजे मुझे अस्थमा का दौरा पड़ा. उस समय मुझे बड़ी शिद्दत से पुरुष की अहमियत का अहसास हुआ और समझ में आया कि एक कवि डॉ० साहब जो मेरे बड़े प्रशंसक है, का फोन नम्बर मेरे पास है. फोन मिलते ही वे तुरन्त आ गए, सुबह तक मेरे सिरहाने बैठे रहे. तब से उनका हमारे यहॉ आना-जाना काफी बढ़ गया. अनजाने ही हम दोनों एक दूसरे के करीब आते गए. डॉ० साहब के सानिध्य में जो मिला है मुझे, उसकी तुलना अमृत से ही की जा सकती है. पहले का सारा जीवन रेत की लहरों के पीछे भटकने जैसा है और रेत की वे लहरे! जिन्हें मृग मरीचिका कहा जाता है, वे किसी की प्यास बुझा सकती हैं भला!

अब कान्त पति की नहीं अपितु सौत

की भूमिका में उतर आए है. रात-दिन क्लेश हर समय व्यंग्यवाण! तनाव के कारण उच्च्व रक्त-चाप रहने लगा है उन्हें. मुझे उनकी इस दशा से बहुत सन्ताप होता है, पर विवश हूँ डॉ० साहब से सम्बन्ध नहीं तोड़ सकती. यह तो जानती हूँ कि दस-बारह दिन में कुछ घंटो का साथ ही मेरे हिस्से में है वे मुझे पूर्ण रूप से नहीं अपना सकते. उनकी डॉक्टर पत्नी है, बच्चे हैं, भरा-पूरा परिवार है. पर जो मुझे मिल रहा है वह भी मेरे लिए एक अकल्पनीय-अलौकिक वरदान है. मैंने तो उनमें पूर्ण पुरुष पाया है जिसने मुझे कुरूप शिला के सुन्दर हृदय को पहचान स्पन्दन भर दिया है. यह जानते हुए भी कि ओस से होठों को तर तो किया जा सकता है पर घूंट भरकर पिया नहीं जा सकता है. मैं डॉ. साहब से दूर होने की कल्पना मात्र से कांप उठती हूँ.

दूसरी ओर मैं कान्त के प्रति भी वचन-बद्ध हूं. वे मेरा अक्षयवट हैं. उन्हें लगता है कि मैंने उन्हें धोख दिया है, उन्हें छोड़ दूंगी. नहीं ऐसा कदापि नहीं होगा. मैंने उनके वर्तमान ही नहीं भविष्य का भी सदैव ध्यान रखा है. कोचिंग सेन्टर की पूरी आय मैं उनके नाम से जमा कराती रही हूँ, घर का खर्च मेरे वेतन से चलता है. इनकी बहनों के विवाहों में भरपूर सहायता की है. इनके परिवार के लोगों को पूरा आदर-मान देती हूँ उपहार देती हूँ. इनके कारण मेरे घरवालों ने मुझसे नाता तोड़ लिया. फिर भी इनसे यही सुनने को मिलता है-तुम्हारा तो बेटा है, उसका विवाह करोगी, परिवार हो जाएगा. मेरा कौन है?

अब बताइये यदि ये अंश को अपना नहीं समझेंगी तो वह कैसे इन्हें चाहेगा? मैं विचित्र दोराहे पर हूँ न डॉ. साहब से नाता छोड़ सकती हूँ ना ही कान्त को व्यथित करना चाहती हूँ. बस वे मेरे शिकन्जे को थोड़ा ढ़ीला कर दें, थोड़ी सी ताजी हवा मेरी सांसों को ले लेने दे. पर उन्होंने तो रौद्र रूप बना लिया है, मरने-मारने की बातें होने लगी है, उनसे मैं भयाक्रान्त हूँ. दीदी प्लीज! आप उन्हें समझाइये वे आपकी बात मानती हैं. हमारा जीवन, हमारे रिश्ते समाज से पहले से ही चर्चित-निंदित है. यदि अब कुछ बखेड़ा हुआ तो जीवन की सन्ध्या काली रात में बदल जाएगी.

आपके पत्र की आतुर प्रतीक्षा में

आपकी चन्द्रा

यह पत्र पढ़कर चिन्तापुर होना स्वाभाविक था. फिर भी स्वयं को संभाल कर कान्ता का पत्र पढ़ना प्रारम्भ किया. हर वाक्य मेरे हृदय की ध इकन बढ़ा रहा था. उन शब्दों से अश्रु झरते से लग रहे थे. कान्ता का तेजोदीट मुखमंडल धुंआ-धुंआ हो कर पत्र से झांक रहा था कान्त ने लिखा था.

प्यारी सौम्या दीदी को

कान्त का प्रणाम

आज आपकी बहुत याद आ रही है. पहले सोचा फोन पर बात कर लूं, पर फोन से तो कई बार बात हुई थी, दिल का हाल बताना कब संभव हुआ है? इसलिए पत्र लिख रही हूँ.

दीदी! आजकल मेरा जीवन तपता रेगिस्तान बन गया है. दूर-दूर तक जलती रेत है, तपता हुआ सूरज है, न कोई पेड़ है न छाया. जिस पेड़ पर तिनक-तिनका जोड़ कर घोंसला बनाया था वह जड़ से उखड़ गया है. चन्द्रा ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा. जिसे सर्वस्व सौंप मैं निश्चित सो रही थी ऑख खुली तो पता चला कि वह ठगनी सब कुछ लूट अपना अलग आशियाना बनाने चल दी है. जो मेरी प्राणप्रिया, जीवन संगिनी बनती थी, जिसे मैंने सदैव संभाला, पति से ठुकराने, परिवार के छोड़ देने पर सहारा दिया, उसके बेटे को पिता का प्यार दिया, पाल पोसकर बड़ा किया, जिस चन्द्रा को घर-बार से झन्झटों से मुक्त रखा, पढ़ने-बढ़ने का समय दिया थाः आज उसे मेरी आवश्यकता नहीं है. आज उस चन्द्रा के बहुत चाहने वाले हो गए है, जिसके साथ रहने से मैं सदैव उपहास का पात्र बनती रही, जिसके पति ने कुरूप कह कर धकिया दिया था. आज वह भूल गई है कि कभी जीवन भर साथ रहने की, संग-संग जीने मरने की कसमें खाई थी. दीदी! अब तक का जीवन मुझे सपना नहीं मरीचिका लगता है. अब यह ओढ़ा हुआ पुरुषत्व मुझे हर समय कचोटता है. काश! उस समय घरवालों की बात

ग़ज़ल

आंसुओं से तर बतर वो आशकी का दौर था।
दीवानगी थी किस कदर जबानियों का दौर था।
आइनों ने सच कहा सच के सिवा कुछ भी नहीं।
अक्श मेरे कह रहे वो दिल नशी कोई और था।
मां के हाथों की पकी वो सोंधी-सोधी रोटियां।
मां के प्यार से सना बो भात का जो को कौर था।
लाड़ले बेटे मेरे अब हो गये दोनों जवान।
वेसखियॉ थे जिंदगी का लड़खड़ाता दौर था।
जिंदगी तेरे उजाले मौत की स्याही से हारे।
मेरा तो जीना यहॉ बस लाश के बतोर था।
बाग में मायूस था वो सुखा हुआ जो पेड़ था।
भीड़ ही में गुम गया वो आदमी कमजोर था।

महेन्द्र श्रीवास्तव, दमोह,म.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++

मान विवाह कर लेती तो आज मेरा एक सच्चा साथी होता, घर परिवार होता. अब तो मुझे यह भी लगता है कि यदि मैं आज भी इस मर्दाने लिबास को उतार चन्द्रा की भांति सजूं-संवरू तो उससे कहीं अधिक सुंदर लगूंगी. पर अब 'पछताए क्या होत.' एक रूखी, अक्खड़,संवेदन शून्य मर्दानी औरत बस यही है मेरी पहचान. इस हट्टी-कट्टी देह में भी एक कोमल हृदय धड़कता है, कोई नहीं सोचता. मैं स्वयं ऐसी नहीं बन गई. कान्ता के कान्त बनने की भी एक कहानी है दीदी.

मैं माता-पिता की प्रथम संतान हूॅं. कुलदीपक की आस लगाए परिवार का कन्या-जन्म से निराश होना स्वाभाविक था. दादी मॉ ने मुझे लड़कों वाले कपड़े पहनाकर संतोष करना चाहा. मेरा दुर्भाग्य कि मेरे बाद भी तीन कन्याएं ही आई. मैं उनका भाई बन कर बढ़ती रही. यहां तक कि बचपन के 'आऊंगा' 'जाऊंगा' भी किशोरावस्था तक चलते रहे. हम चार कन्याओं के पश्चात पुत्र रत्न की प्राप्ति पर परिवार वाले निहाल हो गए. सभी का लाड़-प्यार और ध्यान उस पर केन्द्रित हो गया. मेरी कलाई की राखी उसकी नन्हीं कलाई पर बंधने लगी, मुझे बहुत अखरा. तब तक मैं जवनी की दहलीज़ पर कदम रख चुकी थी और दादी ने कहना प्रारम्भ कर दिया था-'बहुत हो गया यह लड़कों वाला पहनावा और भरम्बा. लड़की हो लड़की बनकर रहो. लक्खन-शऊर सीखो दूसरे घर जाना है.' आज के इस अन्ज़ाम से बेखब़र मैंने घोषणा कर दी-'मुझे न विवाह करना है न कहीं जाना है. नौकरी करके पापा को सहारा दूंगी. बेटा बनकर ही रहूंगी मैं. पर अब बेटा रही न बेटी! एक जुनून सा था कि हर प्रकार से पुरुष ही लगूं. स्त्रियोचित अंगो का विकास रोकने के लिए न जाने कितने आसन व व्यायाम करती. नारी सुलभ कोमलता को पास भी नहीं फटकने दिया. चन्द्रा ने मेरे इस जुनून को सदैव बढ़ावा दिया.

वह तीन-चार वर्ष की रही होगी जब हमारे सामने वाले मकान में अपनी मॉ जानकी के साथ आई थी. जानकी चंदू चाचा की दूसरी पत्नी थी और चन्द्रा उनकी पूर्व पति की सन्तान थी. सबकी उपेक्षा का पात्र मरगिल्ली सी चन्द्रा समवयस्का होने के बावजूद मुझे से आधी ही लगती थी. उसकी बेचारगी ने मेरे बालमन में अपार करुणा भर दी थी. मैं उसे अपने घर ले जाती, खिलाती-पिलाती यहॉ तक कि वह मेरे पास ही सो जाती. उसके घरवालों को तो कोई आपत्ति न होती पर मेरे परिवर वाले खूब नाक मुंह चढ़ाते थे. जब हम स्कूल जाने लगे तो मेरे लड़केपने के कारण तथा चन्द्रा के भिनकेपन के कारण सभी सहपाठी हमसे कन्नी काटते. चन्द्रा हर समय छाया की भांति मेरे साथ रहती. लोग व्यंग कसने से न चूकते-भई वाह क्या जोड़ी है! एक ऊंट, एक बकरी एक मैदा की लौथ, दूसरी कौआ.'

ऐसी बातें सुनकर उस समय मुझे अपनी महानता पर प्रसन्नता ही होती थी. और गुड्डे-गुड़ियों के ब्याह रचाते-रचाते कब मैं और चन्द्रा पति पत्नी बन बैठे पता ही न चला. आप से छिपाऊंगी नहीं जब चन्द्रा का विवाह हुआ तो मैंने उससे बोलना छोड़ दिया, बहुत रोई और जब विवाह टूटा तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई. परन्तु अब चन्द्रा ने मेरा दिल तोड़ डाला है तो मैं उसके हरजाईपने की किससे शिकायत करूं? हमारे रिश्ते को समाज ने कब मान्यता दी थी? और देता भी क्यों हम तो विश्वनियंता के नियमों को धता बता स्वयंभू बन बैठे. यह रोना, पश्चाताप मेरे ही हिस्से में है बस! चन्द्रा अपने प्रेमी के साथ मस्त है. बेटे की भी परवाह नहीं है उसे.

दीदी! मैं इस जीवन से ऊब चुकी हूॅं. इस काया की कारा से मुक्ति चाहती हूॅं. मैं परिवार से, समाज से, भगवान से माफी नहीं मांगूगी. उन्होंने ही तो ऐसा बनाया है मुझे. हॉ! प्रार्थना अवश्य है उस सृष्टिकर्त्ता से कि अगले जन्म में मुझे नारीतन व पुरुषमन देकर धरा पर न उतारे! पूर्ण पुरुष ही बनाए मुझे!

स्वीकारें कान्ता का अंतिम प्रणाम

पत्र पूरा करते-करते किसी त्रासद अनहोनी की आशंका से मेरे हाथ-पैर कांपने लगे. पत्र में दिनांक नहीं लिखा था, लिफाफे की मोहर भी अस्पष्ट थी. क्या करूॅं? कैसे बचाऊं कान्ता को? किसी प्रकार फोन तक पहुंची हूॅं-अंतरात्मा की इस गुहार के साथ कि अभी कान्ता की आवाज सुनाई देगी!

कहीं गीत, कहीं गज़ल

कहीं गीत, कहीं गज़ल
लफजों से अंकित
यह तो भावनाओं की
कोमल हलचल!
कहीं गीत, कहीं गज़ल
दिल की झील में
यह तो खिलता हुआ
हसीन कमल!
कहीं गीत, कहीं गज़ल
मन की आसमान का
यह तो बरसता हुआ
चंचल बादल
कहीं गीत, कहीं गज़ल
सुरो से मोहित,
यह तो तरसता हुआ तरस
चंचल, चपल!

मोनिमा चौधरी, आसाम

मानस में नारी का आदर्श

घनश्यामदास गुप्ता, भोपाल

'आदिकाल से भारतीय नारी प्रेरणा कर स्रोत रही है. यहॉ की नारियों ने ही समय-समय पर अपने चरित्र के उज्जवल कीर्तिमान स्थापित कर भारत को सतियों का देश बनाया है. माता पार्वती, सती सीता, मन्दोदरी, अनुसुईया, सावित्रि, गार्गी और मैत्री आदि प्राचीन विदुषियों के ही नहीं, मध्यकाल और वर्तमान की सती साध्वियों की यशगाथा से इतिहास भरा पड़ा है. राजपूत और मुस्लिम काल के 'जौहरो' ने भारतीय नारी को विश्व के सर्वोच्च्य आसन पर लाकर बिठा दिया है. किसी ने सच कहा है कि "नारी की श्रृंगार रत्न जड़ित आभूषणों से नहीं, उसके चरित्र से होता है."

वैसे तो नारी विभिन्न रुपों में हमारे सामने आती है किन्तु पुत्री, पत्नि और माता तीन उसके प्रमुख रुप है. आचरण के कठोर संयमन, नियमन एवं साधना द्वारा एक आदर्श पुत्री, आदर्श पत्नि के रुप में जीवन निर्वाहन के पश्चात ही आदर्श माता कहलाने की अधिकारिणी बन पाती है. विवाह के पूर्व माता-पिता के घर रहकर आवश्यक शिक्षा दीक्षा द्वारा विद्याध्ययन, नाना प्रकार की कलाओं का ज्ञान, व्यवहार कुशलता आदि ज्ञानोपार्जन इस प्रकार प्राप्त करना जिससे वह अपने को पति की सच्ची अर्द्धागनी सिद्ध कर सके, अपनी संतान का उचित प्रकार लालन-पालन कर उसे सफल नागरिक बना सके तथा सम्पर्क में आने वाले सभी पर अपने व्यवहार की अमिट छाप छोड़ती हुई, जिस कुल में जन्म लिया तथा पतिकुल दोनो की मर्यादा का संरक्षण करती हुई उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में सफल हो, ये ही एक आदर्श पुत्री के कुछ प्रमुख लक्षण है. पुत्री के रुप में अपने परिवार की लाडली तथा सखी सहेलियों का प्रिय होना तो स्वाभाविक गुण है ही. पुत्री सीता के जीवन का मूल्यांकन इस तराजू पर करने से हम मानस द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि एक आदर्श पुत्री में जिन गुणों का होना अनिवार्य है वे सब सीता में भरपूर थे. भरत मिलाप के पवित्र पुन्यस्थल पर गोस्वामी जी ने कहा है 'पुत्री पवित्र किये कुल दोऊ। सुजल धवल जनु कह सब कोऊ.'

सीताजी एक लम्बी अवधि के पश्चात अपने माता पिता से मिलती हैं. स्वाभाविक है कि एक दो दिन उनके साथ रहने की प्रबल अभिलाषा उनके मन में अवश्य रही होगी. किन्तु आदर्श का जी अनुपम उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया अन्यत्र देखने को नहीं मिलता. देवी पार्वती तक बिना बुलाये तथा पति की इच्छा के विपरीत अपने पिता के घर जाने का मोह न छोड़ सकी थी. परन्तु सीता का आदर्श देखिये.-

"कहति न सिय सकुचि मन माहीं. इहां बसब रजनी भल नाहीं."

मानस में पुत्री के रुप में सीता का वर्णन पुष्प वाटिका से राम बरात की विदाई-तक मिलता है. इन प्रसंगो में वैदही के नाम और गुणों का जो वर्णन किया गया है वह उनकी सार्थकता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है. भारतीय नारी की यह विशेषता रही है कि एक बार जिसे हृदय में बिठा लेती है उसे छोड़ अन्य किसी का विचार सपने तक में नहीं आने देती. "नख शिख देखि राम को शोभा। सुमरि पिता पन मन अति क्षोभा." इस बात का द्योतक है कि सीता जी ने पुष्प वाटिका में राजकुमार राम को अपने मन में बिठा लिया था. गौरी पूजन के समय "मोर मनोरथ जानहू नीके" इस बात की पुष्टि करता है. किन्तु फिर भी धनुष टूटने के पूर्व तक उनके मन की क्या दशा रही होगी इसकी कल्पना सहज में ही की जा सकती है. सीता ने अपने हृदय के इन भावों को किसी को प्रकट न कर मर्यादा की महान रक्षा की. इतना ही नहीं यह उनके आत्मबल और सत्य स्नेह का ही परिणाम था कि बड़े-बड़े महारथी धनुष तोड़ना तो दूर उसे हिला भी न सके और अंत में "जेहि को जेहि पर सत्य सनेहू सो तिहि मिलहीं न कछु संदेहूं." सत्य सिद्ध कर दिखाया.

जनकपुर में सीता अपने आदर्श पुत्री गुणों के कारण ही सबको प्रिय थी-"प्रेम विवश नर नारी सब, सखिन्ह सहित रनवासं मनुह कीन्ह विदेहपुर, करुणा विरह निवास।।" इतना ही नहीं पशु, पक्षी तक उन्हें जाते देख व्याकुल थे-"सुक सारिक जानकी ज्याये, जनक पिंजरिन्ह राखि पढ़ायें। व्याकुल कहें कहाँ वेदेही, सुन धीरज परिहरिह न केही।।" और "भये विकल खग, मृग इहि भॉति, मनुज दशा कैसे कही जाती.।" सांसारिक लोगो को छोड़िये, परम वैरागी और महा ज्ञानी जनक भी धीरज न बॉध सके.-"सिय विलोक धीरता भागी, रहे कहावत परम विरागीं लीन्ह राय उर लाय जानकी, मिटी महा मरजाद ज्ञान की।"एक आदर्श पुत्री को छोड़ अन्य के लिये इतना संभव नहीं हो सकता.

अयोध्या कांड से लेकर उनके मरण पर्यन्त आदर्श पत्नि के रुप में सीता की जीवन झॉकियां सर्वत्र बिखरी पड़ी है. विदाई के समय जनकपुर में माता सुनयना, पिता जनक तथा अन्य सभी द्वारा दी गई शिक्षा को सीता ने सुदृढ़ गाँठ बांध ली थी-"सास ससुर गुरु सेवा करहुं, पति रुख लखि आयसु

अनुसरेहू। होएहु संतत पियंही पियारी, चिर अहिवात अशीष हमारी।।" पुत्री सीता ने इस उपदेश का अन्त तक पालन किया और यही कारण है कि वे समस्त पति परिवार को प्राणों से भी अधिक प्यारी थी. "दीप जोति नहीं टारन कहंहुं," इसका प्रमाण है. महाराजा दशरथ के तो वो प्राणो का अवलंबन थी. उन्हीं के शब्दो में देखियें-"सास, ससुर अस कहुउ संदेसू, पुत्री फिरिअ वन बहुत कलेसू. पितु गृह कबहूं कबहूं ससुरारी, रहेहु जहॉ रुचि होय तुम्हारी। एहि विधि करेउ उपाय कदम्बा, फिरहत हाय प्राण अवलंबा. नाहिन मोर मरन परिणामू, कछु न बसाय भये विधि बामू।।" किन्तु पत्नि सीता इस अवस्था को कैसे सहन कर सकती थी। "मैं सुकुमार नाथ वन जोगू, तुम्हहिं उचित तप मोकहुं भोगूं" सास ससुर की सेवा आदि अनेक प्रलोभन सीता के मन को न डिगा सके. वन के भयावने दृश्य और दारुण दुखों की कल्पना भी उनके हृदय को विचलित न कर सकी. पित के तर्को का जो सुन्दर व बुद्धमता पूर्ण उत्तर सीता ने दिया उस पर विश्व का सम्पूर्ण स्त्री समाज आज भी गौरव अनुभव करता है. उसमें मर्यादा और आदर्श की पराकाष्ठा तो है ही, ज्ञान और व्यवहार-कुशलता की स्पष्ट छाप भी परिलक्षित होती है.

"प्राणनाथ करुणायन,
सुन्दर, सुखद, सुजान।
तुम बिनु रघुकुल कुमुद विधु,
सुरपुर नरक समान।।
जिय बिनु देह, नदी बिनु बारी।
तैसिय नाथ पुरूष बिनु नारी"

बिना पति के पत्नि का कोई औचित्य ही नहीं. पति को आत्म समर्पण का इससे बढ़कर और क्या उदाहरण हो सकता है. यही वह भारतीय सभ्यता और संस्कृति है जो निरंतर प्रहारों के पश्चात आज भी देश का गौरव ऊँचा उठाये हुये हैं. पश्चिमी सभ्यता में ऐसा एक उदाहरण चिराग लेकर भी ढूंढने को नहीं मिलेगा. अटूट प्रेम और श्रद्धा को देखिये ये सब पति में परमात्मा के दर्शन करना ही तो है.

"मोहि मग चलत न होइहिं हारी,
छिनु छिनु चरन सरोज निहारी।
सबहिं भॉति पिय सेवा करिहों,
मारग जनित सकल श्रम हरिहों।
बार-बार मृदुल मूरत जो ही,
लागहिं ताप बयार न मोही।"

पति के साथ होने पर स्त्री का साहस कितना बढ जाता है-"को प्रभु संग मोहि चितवनहारा, सिंह बघुहि जिमि ससक सियारा।"

आदर्श पत्नि का एक अन्य प्रसंग देखिये. सुरसरि उतराई श्री राम केवट को कुछ देना चाहते है. पास में कुछ नहीं. मन में बड़ा संकोच उत्पन्न होता है. तभी "पिय हिय की सिय जाननहारी, मन मुदरी मन मुदित उतारी।" इस चौपाई में दो बातों को बड़ा स्पष्ट कर दिया है. सीता में अपने पति राम के हृदय की बात जान लेने की क्षमता थी और पति प्रतिष्ठा ही उनके लिये सब कुछ थी. क्या आधुनिक नारियों से यह अपेक्षा की जा सकती है? यदि मानस का सूक्ष्म अध्ययन किया जाये तो अनेको स्थलों पर सीता ने भगवान राम के आदर्शो और मर्यादा की रक्षा की है. रावण द्वारा हरे जाने पर सीता के विलाप को सुनकर पाषाण हृदय भी रो उठता है.

"हा जग एक बीर रघुराया,
केहि अपराध बिसारेहू दाया।
हा लक्षिमन तुम्हार नहीं दोषू
सो फल पायहूं कीन्हेउ रोषू।।"

रावण ने सीता को वश में करने के लिये साम, दाम, दण्ड, भेद सभी का सहारा लिया, किन्तु प्राणों का भी मोह त्याग जिस साहस और धैर्य के साथ अपने सतित्व की रक्षा की, वह अन्यत्र देखने कर नहीं मिलता.

"व्रण धरि ओट कहित वैदेहीं,
सुमरि अवधपति परम सनेही।
सुन दशमुख खद्योत प्रकाशा,
कबहुँ कि नलिनी करई विकासा।
सो भुज कंठ कि तब असि घोरा,
सुन सठ अस प्रवान पन मोरा।।"

पति वियोग "कृस तन सीस जटा एक बैनी। जपत हृदय रघुपति गुन श्रेणी।" की दशा रामदूत हनुमान स्वयं अपनी ऑखों से देखकर आये थे. पवनसुत के साथ सीता ने जो निवेदन राम के चरणों में भिजवाया था वह अपने आप में अनूठा था.

"अनुत समेत कहेहु प्रभु चरना,
दीन बंधु प्रनतारित हरना।
मन, क्रम, वचन चरन अनुरागी,
केहि अपराध नाथ हों त्यागी।"

घोर संकट में भी सीता ने मन, क्रम और वचन से आदर्श पत्नि होने का पूरा-पूरा परिचय दिया. वास्तव में देखा जाये तो श्रीराम के पुरूषार्थ के पीछे उनकी पत्नि का पवित्र प्रेम और त्याग ही था. संभवतः सीता के अभाव में राम वह मर्यादा, वह आदर्श उपस्थित न कर पाते. सीता की खोज में भगवान राम की जो मनोदशा तुलसी ने वर्णित की है उसे पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि मर्यादा पुरूषोत्तम राम स्वयं पत्नि के विरह में पागल हो गये थे.

दुख के दिनों में तो जगजननी सीते ने सब प्रकार की विपदाओं को सहन कर अपने आदर्श को पत्नि सिद्ध किया ही है, सुख के दिनों में भी वे अपने कर्तव्यों को नहीं भूली और सदैव पति सेवा ही उनके जीवन का लक्ष्य रहा. राज्यारोहण के पश्चात अयोध्या की महारानी बन जाने के उपरान्त भी-

"पति अनुकूल सदा रह सीता,
सोभा खानि सुशील विनीता।
निज कर गृह परिचरजा करई,
रामचन्द्र आयसु अनुसरही।

कौशल्या सासु गृह मांही,
सेवही सबहीं मान मद नाही।"

इतना सब कुछ होते हुए भी गर्भावस्था में स्वयं पति द्वारा परित्याग किये जाने पर भी उनके पतिव्रत धर्म में कहीं कमीं नहीं आई. इसके लिए उन्होंने किंचित मात्र भी पति को दोषी ठहराने का प्रयत्न नहीं किया. सारा दोष स्वयं के भाग्य को देते हुए सहर्ष आज्ञा स्वीकार की और पति के यश, वैभव और सुख में कभी कमी नहीं आने दी. यही वह स्थल है जहॉ वे आदर्श पत्नि की चरम सीमा पार कर जाती है. विश्व में ऐसा उदाहरण अन्य कहॉ हैं? परितक्त सीता अब आदर्श माता के रूप में सामने आती है. ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे अपना यह अंन्तिम धर्म निवाहने के लिए ही वे जीवित रही हों. अन्यथा राम द्वारा त्यागने के तुरन्त पश्चात ही वे अपना शरीर भी त्याग देती. चौदह वर्ष बनवास के पश्चात राजमहलों का सुख प्राप्त करने वाली सीता ने घोर वन में पत्थर की चट्टानों पर किस प्रकार प्रसव वेदना सही, साहस और निर्भीकता के साथ पुत्र रत्नों को जन्म दिया और ऋषि आश्रम में केवल सन्तान के लालन पालन की लालसा में किस प्रकार शेष आदर्श जीवन व्यतीत किया उसे सुनकर ही हृदय भर जाता है. सब प्रकार से निस्सहाय एवं साघनहीन अवस्था में भी दोनों पुत्रों को समुचित रूप से शिक्षित दीक्षित कर यह सिद्ध कर दिखाया की माता के रूप में भी उनका जीवन आदर्श और पूर्ण सफल रहा. वे लव-कुश सीता के ही पुत्र थे जिन्होंने चक्रवर्ती सम्राट महाराजाधिराज राजा राम से टक्कर ले अपने अतुल शौर्य का परिचय दिया था. बिना आदर्श माता बने क्या सीते जगजननी बन सकती थी. गोस्वामी जी ने स्वयं उनकी वंदना आदर्श पुत्री, आदर्श पत्नि और आदर्श माता के रूप में की है.

"सती शिरोमणी सिय गुन गाथा,
सोई गुन अमल अनूपम पाथा।
जनक सुता जग जननि जानकी,
अतिसय प्रिय करूणानिधान की।
ताके युग पद कमल मनावहूं,
जासू कृपा निर्मल मति पावहूं।।"

सीता की आदर्शता पर बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे जा सकते है. संक्षेप में उपरोक्त उदाहरणों से यह स्वयं सिद्ध हो जाता है कि नारी धर्म का जो सुउज्जवल उदाहरण माता जानकी ने प्रस्तुत किया वह सदैव के लिये समूचे विश्व में नारी समाज के लिये आदर्श एवं अनुकरणीय रहेगा. भारत को मानस सीता जैसी विदुषियों पर आज भी गर्व है.

लघु कथा कालू

"बेटे! टॉमी शब्द का क्या अर्थ है?"
अंकल ये नाम तो पापा ने रखा है और मुझे इसका मतलब नहीं पता है.
"कमाल है! यह कुत्ता तुम्हारे यहॉ दस वर्षो से है, और तुम इसे इतने दिनों से 'टॉमी' नाम से पुकारते रहे हो. जब तुम्हें खुद 'टॉमी' शब्द का अर्थ नहीं पता है, तो फिर कुत्ते को कैसे पता चलेगा कि 'टॉमी' नाम से उसे ही पुकारा जा रहा है?"
"कुत्ते की भाषा तो भौं-भौं है वह मनुष्य की कोई भी भाषा नहीं समझता है. वह तो केवल आवाज से ही जान लेता है कि 'टॉमी' नाम से उसे ही बुलाया जा रहा है."
मैं अपने एक मित्र के यहॉ मिलने गया था. वे उस समय घर पर नहीं थे और उनके सोलह वर्षीय पुत्र से मेरी बातचीत चल रही थी.
"अगर हम इस कुत्ते का नाम 'टॉमी' की जगह 'कालू' रख दें तो कुछ ही दिनों में यह कुत्ता अपने आपको 'कालू' नाम से जोड़ लेगा. क्या नाम बदलने मात्र से इस कुत्ते में कोई बदलाव आ जायेगा?"
मैंने बात आगे बढ़ाते हुये कहा.
अंकल, मुझे तो नहीं लगता है कि 'कालू' नाम रख देने से कुत्ते में किसी भी प्रकार का कोई फर्क आ जायेगा.
"किसी न किसी को तो कोई फर्क पड़ेगा बेटे" मैंने कहा.
"किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा अंकल"
"नहीं बेटे फर्क तो पड़ेगा और वह भी केवल आपके पापा को. अब तक वे 'टॉमी' के मालिक होने के नाते अपने आपको इम्पोर्टेड (विलायती) समझते रहे हैं, कुत्ते का नाम 'कालू' रख देने से अब आपके पापा को कोई भी सड़क-छाप आदमी मानने से नहीं हिचकेगा."
मित्र का बेटा स्वीकृति में मुस्करा दिया.

✍ **सत्येन्द्र यादव,** आगरा

कटिबद्धता

रमेश शहर के प्रतिष्ठित कालेज में शिक्षक के पद पर नियुक्त था. अपने उसूलों के लिए कटिबद्ध. एक दिन कालेज के प्रिसिपल साहब ने कहा ये जो रोल नम्बर है. इन लड़को को प्रथम श्रेणी में पास कर देना, तो रमेश ने कहा-इन लड़को को कुछ नहीं आता है, मैं इन्हें फर्जी नम्बर देकर अपने उसूलों से समझौता नहीं कर सकता.
कुछ दिन बाद रमेश को कालेज से यह आरोप लगाकर निकाल दिया गया कि वह लड़कों को फर्जी नम्बर देता था, तथा अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार नहीं है.
अब रमेश को अपनी कटिबद्धता का irk py x;k

✍ **संजय कुमार चतुर्वेदी,** खीरी, उ.प्र.

ममता

"बेटा तू गाड़ी सही तरह से ड्राइव किया कर. क्यों चलाता है इतनी तेज. मुझे तो डर लगता है. और सुन जब चलाया करे तो गाड़ी स्टार्ट करने से पहले भगवान जी का नाम ले लिया कर, ब्रेक के पैर छू लिया कर. सुनता नहीं है तू मेरी बात. बहू तू ही समझा इसे देख इतना बड़ा हो गया. अभी भी लड़कपन नहीं जाता है इसका." मेरे आफिस जाते ही मां रोज मुझसे यह कहते हुए अपनी बहू को मुझे समझाने के लिए आग्रह करती और मैं उसकी एक न सुनता. मैं जब तक घर वापिस नहीं पहुँच जाता मां परेशान रहती. आफिस में भी दो-चार बार फोन करती. और पूछती, "ठीक है अनिल! खाना खा लिया!! गाड़ी सही तरह से चलाकर लाना. अपना ध्यान रखना." कभी कभी तो मैं जवाब दे देता और कभी-कभी फोन काट देता सोचता क्या मां भी हर समय दिमाग खराब करती है. इसके लिए और कोई काम नहीं है. एक दिन मैंने कह ही दिया, "क्या मॉ? आप भी रोज-रोज मुझे हिदायतें देती रहती हो अब मैं कोई बच्चा हूॅ. शादीशुदा हूॅ एक बच्चे का बाप हूॅ और आप है कि मुझे अभी-भी बच्चा समझती है." और अपनी पत्नी की ओर इशारा करते हुए बोला था, "समझाओ शर्मिला" तुम्हीं मां को कहो कि अब मैं बच्चा नहीं हूॅ. अपना अच्छा बूरा समझता हूॅ मैं. शर्मिला कुछ नहीं बोली थी. मां को शायद अच्छा नहीं लगा था सो अपने कमरे में चली गई थी और मेरी पत्नी शर्मिला उनके पीछे-पीछे उनके कमरे में ही चली गई थी. मैं बाहर निकल गया था.

अगले दिन छुट्टी थी. मैं घर पर ही था. मेरा साल भर का बेटा राहुल पास ही लॉन में झूले पर था. मैं कुछ दूरी पर पढ़ रहा था. मां और शर्मिला राहुल को खिला रही थी. देखते-देखते मां और शर्मिला दोनों वहां से चले गये और राहुल अकेला रह गया. वह रोने लगा. न तो मां आई और न ही शर्मिला आई. राहुल पहले तो धीरे-धीरे रो रहा था फिर तेज-तेज रोने लगा. मैं खिसिया गया और शर्मिला तथा मां को आवाज देते हुए चिल्लाया था, "कहॉ गई शर्मिला बेवकूफ औरत, दो पैसे की अक्ल नहीं है. बच्चा इतनी देर से रो रहा है. देखा नहीं जाता." शर्मिला बड़े आराम से मां के साथ चली आ रही थी. मुझे और गुस्सा आ गया था. अब मैं मां से बोला था,"और आप क्या कर रही थी इतनी देर से राहुल रो रहा है आप उसे चुप नहीं करा सकती.सिर्फ एक दो काम है आपके उन्हें भी अच्छी तरह नहीं करती आप. आप भी बस" "क्या बस" क्या कहना चाहते हो कितना दर्द हो रहा है तेरे को. जब तेरी बेटे राहुल को दर्द हुआ तो कैसे चीख रहा है और जब मैं तुझे समझाती हूॅ तब. तब क्या होता है. मुझे दर्द नहीं होता. राहुल तेरा बेटा है, तो तू मेरा बेटा है. समझा मूर्ख. और तू बहू को बेवकूफ बोलता है. उसी की सलाह पर तुझे सीधा करने के लिए मैने यह किया था. वरना मुझे भी राहुल प्यारा है. तू तो मेरा मूलधन है लेकिन राहुल तो मेरा ब्याज है. और ब्याज हरेक को अच्छा लगता है. रही बात बेटे को तो इस दर्द को एक मां से ज्यादा अच्छी तरह से कोई भी नहीं जानता. मां की ममता को समझने के लिए मां का कलेजा चाहिए. समझा. और मां ने भाग कर राहुल को गोद में उठा लिया था बाद में शर्मिला उसे अपना दूध पिलाने लगी थी. राहुल चुप हो गया था. उस दिन के बाद से मैंने गाड़ी धीरे चलानी शुरु कर दी. समय से खाना खा लेता हूॅ और मां के हर फोन का जवाब देता हूॅ. मॉ खूश है.

डॉ० पूरन सिंह, फरीदाबाद

ग़ज़ल

पास आकर भी फ़ासले न गये
आप लेकिन ख्याल से न गये
जिन्दगी के उदास पन्ने पर
गीत ऐसे थे जो पढ़े न गये
लोग ऐसे भी इस जमीन पे थे
प्यार के खत जिन्हें लिखे न गये
बातों-बातों में चंद अफ़साने
अनकहे रह गये, कहे न गये
हम जनम में हुई मुलाकातें
'रचश्री' से वो बिन मिले न गये

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, इलाहाबाद

ग़ज़ल

उसे पुकार न पाई मिरी अना घायल।
लहू बहा के मगर खुश हुई वफ़ा घायल।।
सरा पा ज़ख्म सजाए था फिर भी हॅसता था।
जब उससे कहता था कोई भी कर दवा घायल।
बहुत चलाए थे तीर उसने भी परिन्दों पर।
भुगत रहा है किए की वो अब सज़ा घायल।।
ये तुमने आग लगाई है दोस्तों कैसी।
फ़ज़ा का जिस्म जला, हो गई हवा घायल।।
तड़प रहा है वो जिस तरह, ये बताता है।
हुआ है उसका यक़ीकन कोई सगा घायल।
सकून आज नहीं कल तो आ ही जाएगा।
किसी की बात को दिल से न यूं लगा घायल।।
बड़े सुकून से सोता है 'राज' दिन में मगर
नफ़स-नफ़स में सजाता है रतजगा घायल।।
किसी ने कोई मदद की न शहरें बेहिस में।
सभी से मांग चुका 'राज' आसरा घायल।
मिरी ग़ज़ल को सुना 'राज' और अहिस्ता।
मिरे ही लहजे में उसने मुझे कहा घायल।।

डॉ.राजकुमारी शर्मा, गाजियाबाद

कहानी

मेरा क्या कसूर?

✍अखिलेश निगम 'अखिल', लखनऊ

कार की हेडलाइट और बिजली के खम्भे की रोशनी में अचानक मृदुला की नजर सामने आती हुई एक औरत पर पड़ी.

"जरा, कार रोकिये"-मृदुला ने ड्राइवर से कहा.

"जी मैडम." कहते हुए ड्राइवर ने ब्रेक लगाकर कार को सड़का के बायीं ओर रोक लिया. जब तक ड्राइवर अपनी साइड का गेट खोलकर उतरता उसके पहले ही मृदुला अपनी साइड का गेट खोलकर तेजी से बाहर निकली तथा सड़क की दूसरी पटरी पर जा रही एक औरत को आवाज दी-"हिमानी ऽ ऽऽ......हिमानी ऽऽऽ!"

आवाज सुनकर उस औरत के कदम थम से गये उसने चौंककर आती हुई आवाज की दिशा में देखा पर वह कुछ समझ न सकी और आगे बढ़ गई।

"हिमानी ऽऽ...रूको....रूको...मैं... मैं...तुम्हारी दीदी..... मृदुला...!"

दीदी शब्द सुनकर वह औरत चौंक गई, पैर बिल्कुल थम गये, बड़े आश्चर्य से उसने आती हुई आवाज की दिशा में देखा तथा हर्ष से लपकती हुई पास आकर मृदुला के पैर छुए.

"दीदी! आप....आप...इस समय... यहॉ?" उसके चेहरे पर आनन्दमिश्रित आश्चर्य था.

"हॉ, हमारे एक साथी जज के घर में उनके बेटे का आज जन्मदिन है उसी कार्यक्रम में जा रही हूँ... लेकिन तुम यहॉ कैसे?..तुम्हारा महिला आश्रम तो यहॉ से १०-१२ किलोमीटर दूर है."

"हॉ दीदी,.....वहॉ से मुझे निकाल दिया गया और थक हार कर मैं फिर वहीं पर आ गई, जहॉ से यात्रा आरम्भ हुई थी." हिमानी के चेहरे पर बेबसी झलक रही थी.

"क्या........?" आश्चर्य से मृदुला का मुँह खुला ही रह गया, फिर संयत होकर बोली-"लेकिन तुम्हें महिला आश्रम से क्यों निकाल दिया गया मैंने अपने निर्णय में स्पष्ट आदेश दिया था कि तुम्हें वहॉ रखा जाय और स्वरोजगार का प्रशिक्षण दिया जाय..... अब क्या हुआ?" मृदुला ने बड़ी बेचैनी से पूछा.

"दीदी! यह जानकर आप क्या करेंगी. .... मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये, नाली के कीड़े को बाहर निकालेंगी तो वह मर जायेगा और नाहक आपके ऊपर भी छींटे पड़ेगें." गहन निराशा भरे स्वर में हिमानी ने कहा.

"नहीं, बताओ तो क्या हुआ?"

"आपके निर्णय के मुताबिक मुझे महिला आश्रम में रख लिया गया था, किन्तु वहॉ भी बड़ी दुर्दशा थी. खूब काम लिया जाता था, भरपेट खाने को नहीं मिलता था. मेरे वहॉ पहुँचने के लगभग १५ दिन बाद महिला आश्रम का वार्षिक समारोह हुआ. उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एक मन्त्री आये थे. कार्यक्रम के दौरान ही उनकी निगाह मुझ पर पड़ गई. फिर क्या था, मुझे वहीं सब कुछ करने के लिए आश्रम के अधिकारी दबाव देने लगे."

"फिर क्या हुआ?मृदुला के स्वर में सब कुछ शीघ्र जान लेने की उत्सुकता थी."

"जब मैने इसका पुरजोर विरोध किया तो मुझे संक्रामक रोग से पीड़ित बताकर आश्रम से बाहर कर दिया गया. उसके बाद रोजगार पाने के लिये मैंने बहुत हाथ पैर मारे. घरेलू नौकरानी का काम करने के लिए न जाने कितने घरों की चौखट पर नाक रगड़ी. न जाने कितने देवी देवताओं के आगे मत्था टेका कि मुझे उस नर्क की दुनिया में फिर न जाना पड़े लेकिन थक-हार कर फिर यहॉ आना पड़ा."

"क्या किसी ने घरेलू नौकरानी के रूप में काम नहीं दिया?"

"नहीं दीदी..... सभी मेरे घर का पता पूछते थे और जवान होने के कारण कोई भी मुझे अपने घर में जगह देने के लिए तैयार नहीं था..... आग लग जाये मेरी इस सुन्दरता को.... इस जवानी को, जिसके कारण मुझे ये दिन देखने पड़ रहे है."

"क्रोध में हिमानी की दोनों मुट्ठियॉ भिंच गई थी."

अचानक मृदुला की नजर सड़क के इर्द-गिर्द खड़ी भीड़ पर जा पड़ी. लोग आपस में खुसुर-पुसुर कर रहे थे तथा बड़े आश्चर्य से उन्हें देख रहे थे. एकाएक मृदुला को अपनी पद-प्रतिष्ठा का ख्याल आ गया.

"ठीक है, हिमानी.....चलती हूँ.... कोई रास्ता खोजूँगी."

"दीदी रहने दीजिये.... कहॉ तक आप इस समाज को बदल पायेंगी. शायद हमारे भाग्य में यही सब कुछ है." यह कहते हुए हिमानी ने मृदुला के पैर छुए.

"परेशान मत हो हिमानी, मैं हू ना.." कहते हुए मृदुला कार में बैठ गई और ड्राईवर को चलने का इशारा किया.

अभी कार एक फर्लांग ही आगे चली होगी अचानक मृदुला ने कहा-"ड्राईवर! गाड़ी घुमाइये, सीधा घर चलिये."

"पर मैडम...आपको तो सिन्हा जी के घर बर्थ डे पार्टी में जाना है."ड्राईवर अचकचाते हुए बोला.

"नहीं अब मुझे वहॉ नहीं जाना है. सीधे घर चलो."मृदुला ने आदेश दिया. ड्राईवर ने उनके आदेश के मुताबिक कार घर की ओर मोड़ दी. घर पहुँचकर मृदुला ने ड्राईवर को अगले दिन आफिस समय पर कार लाने के लिए कह दिया. जैसे वह घर के अन्दर पहुँची-"अरे! बर्थ डे पार्टी बहुत जल्दी खत्म

हो गई.....क्या खाने-पीने का कुछ प्रबन्ध नहीं था?" राजन ने बड़े आश्चर्य से मृदुला से पूछा.

"नहीं, मैं बीच रास्ते से ही लौट आई"

"क्यो? क्या बात हुई?"

"कुछ खास नहीं....बस थोड़ा सर में दर्द था."

मैंने आपको कितनी बार समझाया कि बहुत अधिक मानसिक परिश्रम मत किया करो. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता लेकिन आप है कि मानती ही नहीं.-झुंझलाते हुए राजन ने कहा. तभी उनका पॉच वर्ष का बेटा दौड़ता हुआ मृदुला से आकर लिपट गया.

"मम्मी...मम्मी! मेरा बर्थ डे कब मनाओगी? मैं अपनी बर्थ डे पर ढेर सारे गिफ्ट लूंगा और स्कूल के सभी दोस्तों को बुलाऊंगा."

"हॉ मानस, आपका बर्थ डे खूब धूम ध ााम से मनाया जायेगा" मृदुला ने आश्वस्त किया. उसके बाद राजन की ओर मुखातिब होते हुए कहा.

"आप और मानस दोनों भोजन कर लीजिए मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं है."

"क्यों?"

"बस थोड़ा सर भारी है."

"आपका अक्सर सर भारी रहता है आखिर पैर कब भारी होगें." चुटकी लेते हुए राजन ने कहा.

"आपको तो हर समय मजाक ही सूझता रहता है." झॅुझलाते हुए मृदुला ने कहा.

मृदुला की झुंझलाहट पर राजन ने खिलखिलाते हुए मानस से कहा-"मानस, मम्मी से कहो कि इस बार मैं अपनी बर्थ डे पर प्यारी सी असली गुड़िया गिफ्ट में लूंगा."

मानस ने चहकते हुए कहा-"हॉ मम्मी. ...मजा आ जायेगा. हम दोनों साथ-साथ खेलेंगे."

मृदुला बिना कोई जबाव दिये बोझिल कदमों से अपने कमरे में चली गई.

राजन और मानस भोजन करने के पश्चात् लगभग सो गये थे. वह भी सोने के लिए बार-बार करवट बदल रही थी लेकिन नींद उसकी पहॅुच से कोसों दूर थी. रह-रहकर हिमानी का भोला चेहरा बरबस याद आ रहा था. उस दिन सुबह कोर्ट लगी ही थी, उसने पहले मुकदमें की सुनवाई के लिए वादी एवं प्रतिवादी पक्ष को बुलाने के लिए पेशकार को आदेश दिया, उस मुकदमें में एक स्त्री और दो पुरुष अभियुक्त थे. मृदुला उस मुकदमें की फाइल पढ़ने में व्यस्त थी अचानक उसकी नजर अभियुक्तों पर पड़ी. पुरूषों के साथ खड़ी उस नवयौवना पर नजर टिक सी गई.

बर्फीले पर्वत शिखर पर प्रातःकालीन सूर्य की स्वर्णिम आभा सी दीप्तिमान देह....बोलती हुई नीलकमल सी ऑखें. ...बालरूण की तरह संपुष्ट ओष्ठ... .काले पठार की तरह कंधे पर फैले हुए उन्मुक्त लम्बे घुंघराले केश... इकहरा सन्तुलित कमनीय शरीर.... रूप, लावण्य एवं सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा, मानो विधाता ने बड़ी फुरसत में गढ़कर पृथ्वी पर भेजी हो.

"मी लार्ड.. ये अभियुक्त वेश्यावृत्ति करते हुए पकड़े गये है." अभियोजन पक्ष के वकील ने कहा.

"क्या!?" मृदुला अचकचा सी गई.

"जी, ये सभी वेश्यावृत्ति करते हुए पकड़े गये है और यह औरत शहर की बहुत नामी वेश्या है."

मृदुला को ऐसा लगा मानो किसी ने गर्म पिघले हुए शीशे को देनों कानो में उड़ेल दिया हो और वह शीशा शरीर की नस-नस मे समाता जा रहा हो तथा वह उस लावे में बुरी तरह झुलसी जा रही थी. उसे ऐसा लगा कि यह इस सौन्दर्य की प्रतिमा का बहुत बड़ा अपमान है. ऐसा कदापि नहीं हो सकता.

"ठीक है. गवाह पेश कीजिए."मृदुला ने अपने को संयत करते हुए कहा. न्यायालय में पुलिस बल के निरीक्षक, उपनिरीक्षक एवं आरक्षीगण उपस्थित हुए.

"मी लार्ड.... मैं उस दिन कोतवाली क्षेत्र में रात्रि गश्त में था. मुखाबिर से सूचना प्राप्त होने पर अपने दल-बल के साथ शहर के चौक क्षेत्र में दबिश दी, वहॉ पर वेश्यावृत्ति करते हुए इन लोगों को रंगे हाथ पकड़ा गया है. रात्रि होने के कारण कोई गवाह मिल न सका." इंस्पेक्टर कोतवाली ने बयान दिया.

पुलिस बल के अन्य सदस्यों ने बारी-बारी घटना का समर्थन किया.

"ठीक है. अब अभियुक्तों के बयान कराये जाएॅ."

कटघरे में उस स्त्री को लाकर खड़ा किया गया.

"तुम्हारा क्या नाम है?" मृदुला ने पूछा.

"हिमानी."

"तुम्हें यह सब करने की क्यों आवश्यकता पड़ गई?"

वह निरपेक्ष भाव से मृदुला को एकटक देखते हुए मौन रहीं.

"ईश्वर ने तुम्हें सौन्दर्य की देवी बनाकर धरती पर भेजा है और तुम इस निन्दनीय एवं घृणित कार्य में लिप्त हो, ऐसा क्यों?" मृदुला ने प्रश्न किया.

उसके चेहरे पर अनेकानेक भाव आये पर वह मौन रही.

"तुम कोई जवाब क्यों नहीं देती खुलकर बताइये. तुम्हारे साथ पूरा न्याय किया जायेगा."

"दीदी! यह रूप...यह सुन्दरता ही मेरी सबसे बड़ी दुश्मन बन गई है... .काश, मैं दुनिया की सबसे बदसूरत औरत होती तो कम से कम मुझे ये दिन न देखने पड़ते." कहते हुए वह फफक कर रो पड़ी.

दीदी शब्द सुनकर मृदुला का अन्तमन

झनझना उठा. उसे ऐसा लगा जैसे उसकी छोटी बहन उसे पुकार रही हो. अपने को संयत करते हुए बोली-
"तुम्हें अपने बचाव में क्या कहना है?"
उसने रूंधे हुए कंठ से कहा "दीदी... यदि आप वास्तव में मुझे न्याय दिलाना चाहती है तो मुझे जेल में ही रहने का आदेश दे दीजिए.... कम से कम बाहर नर्क की जिन्दगी से मुक्त तो रहूंगी." कहते-कहते उसका गला भर आया था.
मृदुला एकटक उसके चेहरे पर चढ़ते उतरते भावों को देखती रही. हिमानी के साथ पकड़े गये दोनो पुरूषों ने अपने बयान में जुर्म से इन्कार किया तथा उनके बचाव पक्ष के वकील ने लम्बी बहस की तथा उन दोनों को जमानत पर छोड़ने के लिए तर्क प्रस्तुत किये.
अभियोजन एवं बचाव पक्ष की दलीलें सुनने के बाद मृदुला ने मुकदमा सुनवाई की अगली तारीख दे दी. इसके बाद वह अपने विश्रामकक्ष में चली गई तथा उन्होंने अपने पेशकार को आदेश दिया कि वह हिमानी को विश्रामकक्ष में बुला लाए.
"पर मैडम.., वह वेश्या है क्या उसे चैम्बर में बुलाना उचित होगा?" पेशकार की पेशानी में बल पड़ गये.
"क्या वह इन्सान नहीं है?..जानवर हैं? या उससे अपराध की पृष्ठभूमि की जानकारी करना मेरा कर्तव्य नहीं है. पेशकार निरूत्तर हो गया. घबड़ाते हुए हिमानी ने कक्ष में प्रवेश किया.
"आओ हिमानी, घबड़ाओं नहीं... मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहती हूँ."
"...जी" वह सहम सी गई.
"बताओ, तुम इस धन्धे में क्यों आई? क्या तुम्हारे परिवार वालों ने विरोध नहीं किया?"
"दीदी, मैं बचपन से अनाथ थी. मेरी माँ मुझे जन्म देने के दूसरे दिन ही स्वर्ग सिधार गई तथा पाँच वर्ष की अवस्था में ही मेरे पिता जी कैंसर रोग में चल बसे. मेरे चाचा जी ने ही मेरा पालन-पोषण किया. उनके कोई सन्तान नहीं थी. चाची जी भी कई वर्ष पहले ही मर चुकी थी."
"क्या घर में खेती आदि नहीं थी, कैसे तुम्हारा लालन-पालन हुआ?" यह कहते हुए मृदुला ने उसे सामने कुर्सी पर बैठने का इशारा किया पर वह खड़ी रही तथा अपराध बोध से ग्रसित होकर कहा-
"नहीं दीदी!....मैं आपके सामने बैठ नहीं सकती. ... मैं तो इतनी गन्दी हूँ कि आपके सामने खड़ी होने के लायक भी नहीं हूँ."
"अरे, ऐसी बात नहीं... ठीक है अपने बारे में और बताओ." मृदुला ने उत्सुकता प्रकट की.
"मेरे चाचाजी एवं पिताजी की थोड़ी सी जमीन थी किन्तु गाँव के दबंग लोगों ने उस पर कब्जा कर लिया था. चाचाजी ने मजदूरी करके ही हम लोगों का पालन पोषण किया है."
"क्या तुम कुछ पढ़ी-लिखी भी हो?"
"हाँ दीदी, मेरे गाँव से २ किलोमीटर दूर सरकारी स्कूल था जिसमें मैं कक्षा आठ तक पढ़ी हूँ. मुझे पढ़ने का बहुत शौक था लेकिन गाँव या उसके आस-पास ऊँची शिक्षा का कोई साधन नहीं था और न ही हमारे पास इतना अधिक धन था. किसी प्रकार गुजर-बसर हो जाती थी."
"फिर शहर में कैसे आना हुआ?"
"जब मैं लगभग १५ वर्ष की थी, तब एक दिन हमारे गाँव में दो पुरूष एवं दो महिलायें आई थी. उन लोगों ने गाँव की लड़कियों को सरकारी एवं प्राइवेट अस्पताल में नर्स की नौकरी का झाँसा दिया चूँकि हमारे घर में खाने-पीने की बहुत तंगी थी और मैं पैसा कमाने के लिए छोटी-मोटी नौकरी भी करना चाहती थी. नर्स की नौकरी के लिए आस-पास के गाँवों की दस बारह लड़कियाँ भी तैयार हो गई थी. मैं भी अपने चाचा से जिद करके उन सबके साथ शहर आ गई."
"शहर में उन लोगों ने फिर आपके साथ कैसा व्यवहार किया?"
"शहर में इन लोगों द्वारा सभी लड़कियों को लगभग एक महीने तक नृत्य का प्रशिक्षण दिया गया और हम लोगों को यह कहकर आश्वस्त किया गया कि कई फिल्मों के डायरेक्टरों से भी बात हो गई है, नर्स की नौकरी के साथ-साथ फिल्मों में भी काम दिया जायेगा. इसके लिए नृत्य एवं अभिनय का प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है. सभी लड़कियाँ बहुत खुश थी कि चलो इसी बहाने फिल्मों में भी काम करने का अवसर मिलेगा."
"फिर क्या हुआ?" एकाएक मृदुला की जिज्ञासा बढ़ गई.
"लगभग एक महीने बाद हम सबको यह कहकर अलग-अलग ले जाया गया कि फिल्म के डायरेक्टर से बात करनी है और रात्रि के लगभग ११ बजे गाड़ी से शहर के सुनसान मुहल्ले में ले जाया गया, वहाँ के लोग मुझे बड़ी गन्दी नजरों से देख रहे थे, कुछ नशे में झूम रहे थे. वहाँ का माहौल बड़ा अजीब सा लगा. मुझे अन्दर ही अन्दर बड़ा भय लग रहा था, जो महिला मुझे अपने साथ लाई थी मैने उससे वहाँ से ले चलने के लिए कहा, तो उसने कहा कि हमें आज रात्रि यहाँ विश्राम करना होगा कल सुबह फिल्म के डायरेक्टर से मिलने चलेंगे वे कहीं बाहर गये हुए है. वहीं मेरे साथ हादसा हुआ."
"कैसा हादसा?" मृदुला का अन्तर्मन काँप उठा.

"मुझे रात्रि के भोजन के बाद एक गिलास दूध दिया गया उसमें कोई नशीली वस्तु मिली थी. उसके बाद मुझे कुछ भी होश नहीं रहा. सुबह जब मेरी नींद खुली तो मैंने अपने आपको पूर्णतया निर्वस्त्र पाया और मेरी इज्जत लुट चुकी थी."

"फिर तुमने क्या किया?"

"जो पुरूष और महिलाएं हमें लाई थी वे सब मुझे छोड़कर जा चुके थे वहॉ के लोग मुझे शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना देने लगे इसके पश्चात प्रत्येक रात्रि को मेरे शारीरिक उत्पीड़न की कहानी दुहराई जाने लगी. न जाने कहॉ-कहॉ से नये-नये लोग आते थे"

"कभी तुमने वहॉ से भागने का प्रयास नहीं किया?"

"पहली रात में ही मेरी बेहोशी की स्थिति में मेरी अश्लील वीडियों सी.डी. तैयार कर ली गई थी और मेरे नग्न फोटोग्राफ भी लिये गये थे. जब-जब मैंने विरोध किया. उन लोगों ने वह सी.डी. और फोटोग्राफ दिखाकर ध मकी दी कि यह सी.डी. और फोटोग्राफ तुम्हारे गॉव भेज दिये जायेगें. वहॉ तुम्हारी और तुम्हारे चाचा की बहुत बदनामी होगी और गॉव में भी तुम्हें कोई रहने नहीं देगा. इस पर मैं बहुत घबड़ा जाती. एक रात मैं वहॉ से भाग निकली किन्तु रेलवे स्टेशन के पास मुझे इन लोगों ने पकड़ लिया और कमरे में बंद कर बड़ी पिटाई की. कई दिन भूखा भी रखा." यह कहते हुए हिमानी कॉप सी गई.

"ठीक है. मैं तुम्हें न्याय दिलवाऊँगी." आश्वस्त करते हुए मृदुला ने कहा.

"दीदी! मुझे अपनी रिहाई नहीं सजा चाहिए. मुझे जेल में ही रहने दीजिए. कम से कम उस नर्क से मुक्ति तो मिल जायेगी.... मैं दोबारा उस नर्क में नहीं जाना चाहती." हिमानी की ऑखों से अश्रुधारा बह रही थी.

"घबड़ाओं नहीं हिमानी. तुमने मुझे अपनी बड़ी बहन माना है. तुम्हारे साथ पूरा न्याय होगा." मृदुला ने निश्चयात्मक स्वर में कहा.

"दीदी मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है. " यह कहते हुए उसने मृदुला के पैर पकड़ लिए और फफक कर रो पड़ी, गला रूँध गया था, ऑसुओं की झड़ी लग गई थी, उसकी ऑखों से टप-टप झरते हुए गर्म ऑसू मृदुला के पैर पर गिर रहे थे, जिससे मृदुला के अन्तर्मन में सिहरन सी हो रही थी. मृदुला ने उसे उठाकर ढ़ाढस बॅधाया और बोली- "जाओं हिमानी, मैं तुम्हें इस नर्क से मुक्ति करूंगी."

अश्रुपूर्ण आनन्द के साथ हिमानी कमरे से बाहर चली गई. उस रात मृदुला की ऑखों से नींद बहुत दूर थी. रह-रहकर उसे अपनी छोटी बहन मंजुला का भोला चेहरा ऑखों के सामने आ जा रहा था. जिसे हाईस्कूल में पढ़ते समय, एक दिन सायंकाल कोचिंग से लौटते समय, वासना के भूखे भेड़ियों ने बलात्कार कर हत्या कर दी थी. तब उसने मंजूला की जलती चिता पर यह संकल्प लिया था कि वह अपने जीवन में जज बनेगी और समाज के दबे-कुचले, अनाथ एवं बेसहारा लोगों के साथ न्याय करेगी. आज उसे ऐसा लग रहा था मानों मंजूला ही हिमानी के रुप में उससे न्याय की फरियाद कर रही है. उसके मन में न जाने कैसा शूल चुभने लगा.

इस मुकदमें की अगली सुनवाई पर हाल खचाखच भरा हुआ था. सभी को निर्णय की प्रतीक्षा थी. अभियोजन एवं बचाव पक्ष के वकील, पत्रकार तथा शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे. अभियोजन पक्ष के साथ-साथ अनेक समाज सेवी संगठन के कर्ता-धर्ता भी इस मामले में हिमानी को कठोर सजा दिये जाने के पक्ष में थे. शहर के एक प्रसिद्ध समाज सेवी संगठन के अध्यक्ष ने कहा-"मी लार्ड, इस वेश्या और इनके साथियों ने बहुत बड़ा सामाजिक अपराध किया है. शहर का वातावरण दूषित हो गया है, अनैतिकता का बोलबाला है, मेरी यही प्रार्थना है कि इन्हें कठोर से कठोर सजा मिलनी चाहिए."

"आप ठीक कहते है महानुभाव, किन्तु यदि यह आपकी बेटी या बहन होती तो आप क्या करते?"मृदुला ने प्रश्न किया.

"हमारे संस्कार इतने गिरे हुए नहीं है. " वह सज्जन बौखला से गये.

"मेरा मानना है कि यह सम्पूर्ण समाज की बेटी और बहन है. सामाजिक अव्यवस्था, गरीबी, लाचारी और वासनात्मक प्रवृत्ति ही एक मासूम लड़की को वेश्या बना देती है... जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है....हिमानी, तुम्ही अपनी व्यथा-कथा सबके सामने बताओ." मृदुला ने हिमानी को आदेश दिया. हिमानी कोर्ट के कटघरे में खड़ी

देखो समय बदल रहा है

अपना अपनों को छल रहा है
देखो, समय बदल रहा है।
लगे हैं एक दूसरे की होड़ में,
कोई दूसरे पर जल रहा है।
लगे हैं कोई लू में कोई छू में,
कोई जले पर नमक छिड़क रहा है।
देखो, समय बदल रहा है।।
नहीं ठहरता था कभी नीबू नाक पर,
सूरज आज उसी का ढल रहा है।
लगे हैं अपनी स्वार्थसिद्धि में,
मूंगछाती पर किसी की दल रहा है
देखो, समय बदल रहा है।।
भला क्या करेगा कोई किसी का,
जो दूसरों के टुकड़ों पर पल रहा है
देखो, समय बदल रहा है।।

रामचन्द्र राठौर, शाजापुर, म.प्र.

हो गई. उसकी एक दृष्टि हाल में उपस्थित लोगों के वासनात्मक बाणों से बिंधकर शरशैय्या बन गया हो, हाल में उपस्थित लोग उसे ललचाई दृष्टि से देख रहे थे. अधिकांश सफेदपोश लोगों को उसने अपने मुहल्ले में घूमते हुए देखा था. उनमें से कई व्यक्तियों ने उसके शरीर का उपभोग भी किया था. हिमानी ने सिल सिलेवार अपनी आप बीती कोर्ट में सुनाया. मृदुला ने उसके द्वारा बताई गई कहानी को उसके बयान में रिकार्ड करने हेतु पेशकार को निर्देशित कर दिया. उसकी कहानी सुनकर हाल में सन्नाटा पसर गया. जो लोग कठोर दंड देने की पैरवी कर रहे थे. वे अपराध बोध से नतमस्तक थे. मुकदमें की सुनवाई के पश्चात मृदुला ने अपना निर्णय सुनाया. "मौखिक एवं अभिलेखीय साक्ष्यों के परिशीलन से यह स्पष्ट होता है हिमानी ने जान बूझकर वेश्यावृत्ति नही अपनाई वरन समाज ने स्वयं उसका शारीरिक एवं मानसिक शोषण कर उसे नर्क की जिन्दगी जीने के लिए मजबूर कर दिया. उसे जेल की यातना देने या फिर उन्हीं अँधेरी नर्क की गलियों में जीवन यापन करने के लिए छोड़ देने पर हिमानी के साथ न्याय नहीं हो सकेगा. अतः मैं आदेश देती हूँ कि उसे शहर के सबसे बड़े गीतांजलि महिला आश्रम में रखा जाय, तथा उसे स्वरोजगार एवं कुटीर उद्योग प्रशिक्षण दिया जाय ताकि वह स्वावलम्बी बनकर अपना शेष जीवन जी सके तथा वेश्यावृत्ति में लिप्त दोनों व्यक्तियों को दस-दस हजार रूपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया जाता है, अर्थदण्ड की यह धनराशि गीतांजलि महिला आश्रम को प्रदत्त की जायेगी ताकि नारी उत्थान के प्रयासों को बल मिल सके" इस अनूठे निर्णय पर सम्पूर्ण हाल करतल ध्वनि से गूँज उठा था. हिमानी ने हाथ जोड़कर उसका तथा ईश्वर का आभार प्रकट किया. वह भाव विह्वल थी, उसकी आँखों से खुशी के आँसू झर रहे थे. मृदुला को भी ऐसा लगा जैसे आज उसने अपनी छोटी बहन मंजुला के साथ न्याय कर सकी हो. अगले दिन उसके द्वारा दिये गये निर्णय को दैनिक समाचार पत्रों ने प्रमुखता से छापा था तथा इसे एक ऐतिहासिक निर्णय बताया था. जिला न्यायाधीश एवं अन्य साथी न्यायाधीशों ने भी उसे इस निर्णय पर बधाई दी थी.

अचानक मृदुला काँप सी गई. आज सड़क किनारे मिली हिमानी का निराश निस्तेज चेहरा. ...बोझिल आँखें.. उसका व्यथित स्वर याद आ गया. ऐसा लगा कि उसका सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया. इसी उधेड़बुन में उसे हल्की सी झपकी आ गई.

आज उसे एक महत्वपूर्ण मुकदमें की सुनवाई में न्यायालय जल्दी पहुँचना था, लेकिन काफी देर हो चुकी थी. जब वह न्यायालय पहुँची तो देखा कि न्यायाधीश की कुर्सी पर हिमानी बैठी हुई है. यह देखकर मृदुला हड़बड़ा सी गई. हिमानी ने उससे प्रश्न किया. "दीदी! बताओ मेरा क्या कसूर है? आपका समाज, आपका ईश्वर और आप सब मुझे किस अपराध की सजा दे रहे हैं?"

मृदुला कोर्ट के कटघरे में अवाक सी खड़ी थी.

"बोलो न दीदी.... मेरा क्या कसूर है?... मेरा क्या कसूर है?"

मृदुला को एकाएक ऐसा लगा कि जैसे उसकी साँस रूक रही हो. वह बदवहास सी उठ बैठी, सम्पूर्ण देह पसीने से लथपथ थी, दिल की धड़कन एकदम से बढ़ गई थी. उसके मन-मस्तिष्क में हिमानी द्वारा स्वप्न में किया गया प्रश्न ज्वालामुखी की तरह धधक रहा था, किन्तु वह अपने को निरीह, बेबस और लाचार पा रही थी.

++++++++++++++++++++

भारत की माटी

भारत की माटी सोना है, भारत की माटी चांदी है।
भारत की माटी हीरा है, भारत की माटी मोती है।।
अनगिन रतन दिये इसने,
जिनकी शान निराली है,
इसीलिए तो माता के,
अधरों पर देखो लाली है।।
सरहद पर पूत सदा जगते, तब रक्षा मां की होती है।
भारत की माटी हीरा है, भारत की माटी मोती है।।
वतनपरस्ती का जज़्बा,
देखो रग-रग में दौड़ रहा।
हर कोई निज अंतर्मन को,
करगिल के पथ पर मोड़ रहा।।
जंग भेजकर लालों को, ना कोई जननी रोती है।
भारत की माटी हीरा है, भारत की माटी मोती है।।
बलिदानों की यह पुण्य-धरा,
कुर्बानी तो इक गहना है।
वह मूल्य समझता है जिसने
हंसकर के इसको पहना है।।
मातृभूमि पर मुंडो की बस माल समर्पित होती है
भारत की माटी हीरा है, भारत की माटी मोती है।।
भारत मां की महिमा अपार,
शत्-शत्-शत्-शत् अभिनंदन है।
श्रद्धा के सुमन समर्पित है,
और बार-बार अभिनंदन है।।
आर्यवर्त की माटी तो, बस शौर्य-वीरता बोती है।
भारत की माटी हीरा है, भारत की माटी मोती है।।

प्रो० डॉ० शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

सच्चा मित्र

✍उत्कर्ष पाण्डेय'गुलशन', बहराइच

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को कहानी पढ़ना तो अच्छा लगता ही होगा. इस बार मैं उत्कर्ष भईया की एक कहॉनी सच्चा मित्र दे रही हूँ. यह कहानी आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा.आपकी बहन

संस्कृति 'गोकुल'

शाम का समय था, आकाश में लालिमा छाई थी, सूरज डूबने को था, पंक्षी अपने घरों से वापस लौट रहे थे, इतने में अचानक आंधी आ गई और एक गौरैया का बच्चा ऑगन में खेल रहे रामू के पास आकर गिर गया और चौं-चौं करने लगा. रामू उसे देखकर घबरा गया और दौड़ कर मॉ के पास आया तथा मां को पकड़ कर गौरैया के पास ले गया. रामू की मॉ ने गौरैया को अपने हाथ में उठा लिया और सहलाने लगी. धीरे-धीरे मॉ की ममता पाकर गौरैया का बच्चा चुप हो गया तो मॉ ने उसे खाने के लिए कुछ दाने दिए. रामू ने उसके पैर को धागे से बॉध कर जमीन पर छोड़ दिया. वह बच्चा फुदकने लगा. वह कभी उड़ कर रामू की चारपाई पर बैठ जाता तो कभी जमीन पर आ जाता यह देखकर रामू की मॉ ने उसे सोने के लिए बुला लिया.

जब वह सोकर उठा तो गौरैया का वहॉ पर नहीं था. वह उड़कर कहीं दूर जा चुका था. उसे न पाकर रामू को बहुत दुख हुआ वो उस दिन स्कूल भी नहीं गया और भूखा प्यासा रहा. वह शाम को कुएॅ के पास बैठकर यही आए लगाए आकाश की ओर देखता रहा कि कहीं वह बच्चा उसे नजर आए. जिस झुंड से कोई भी चिड़िया अलग दिखाई देती उसे वह अपनी गौरैया समझ लेता. उस रात जब वह बच्चा दिखाई नहीं दिया तो वह रात भर जागता रहा और उसे कब नींद आ गई पता हीं नहीं चला.

अगले दिन रामू अपने छत पर सोया हुआ था. सुबह-सुबह गौरैया का वही बच्चा रामू की छत पर आकर बैठ गया और चौं-चौ करने लगा उसकी आवाज सुनकर रामू उठा और दौड़ कर उसे पकड़ लिया और उसने उस बच्चे को कुछ दाने खाने को दिए. अब दोनों में गहरी मित्रता हो गई थी. कभी-कभी वह बच्चा रामू के स्कूल भी पहुॅंच जाता.

कुछ दिनों के लिए रामू ननिहाल चला गया था. वह बच्चा वहॉ रोज-रोज रामू के घर आता और उसे न पाकर चौ-चौ कर चिल्लाता और चला जाता. अब रामू वापस अपने घर आ रहा था वह बच्चा उसे रास्ते में ही मिल गया और आकर उसके कंधे पर बैठ गया. रामू उस बच्चे से मिलकर बड़ा खुश हुआ.

सीखः दुःख में काम आने वाला ही सच्चा मित्र होता है.

गरीबी की मात

✍**कु० आख्या पाण्डेय,बह**राइच

शिलॉग की पहाड़ी पर बसे एक छोटे से गॉव का नरेश छठी कक्षा का मेधावी और प्रतिभाशाली छात्र था. उसे पढ़ने में बहुत रूचि थी परन्तु पिता की मृत्यु के बाद घर का सारा कार्यभार उसके नन्हें हाथों में आ गया. मॉ बीमार रहने लगी जिसके कारण उसे खाना बनाने के लिए जंगल में जाना पड़ता था और लकड़ियॉ एकत्रित करनी पड़ती थीं.

एक दिन नरेश रोज की तरह लकड़ियॉ एकत्रित करने जा रहा था कि रास्तें में उसे एक शहरी औरत मिली जो शायद किसी को ढूंढ रही थी. उसने मन ही मन सोचा कि अगर मैं इन्हें अपने गॉव तक सही सलामत ले जाऊँ तो इसके बदले मुझे कुछ पैसे मिल जाएगे और मैं बातों-बातों में उनसे यहॉ आने का मकसद भी पूछ लूंगा.

नैतिकता के भाव से उसने पूछा कि क्या मैं आपको उस गॉव तक छोड़ दूं, इस पर वह औरत हॅस कर बोली तुम मुझे उस गॉव तक ले जाओगे तो मैं तुम्हें १० पैसे दूंगी जो तुम्हारे लिए काफी होंगे. इस पर उसने कहा कि मैं ही अपने घर में कमाने वाला अकेला हूँ और मेरी बीमार मॉ कुछ करने लायक नहीं है इसलिए यह पैसे मेरे लिए काफी नहीं होगें.

यह सुनकर वह औरत भावुक होकर कहने लगी कि चलो मैं तुम्हें कुछ और पैसे दूंगी और तुम्हारे साथ घर भी चलूॅंगी. वह लड़का खुश होकर कहने लगा कि मॅा देखो कौन आया है. मॉ ने करवट लेकर देखा तो कहने लगी तुम कौन हो बेटी? इस पर उस औरत ने प्रणाम करते हुए कहा मै सीमा हूँ. मैं शहर से आई हूँ और डॉक्टर हूं. अब तक सूरज ढल चुका था और रात होने वाली थी.

सीमा पहली बार इस इलाके में नौकरी करने आयी थी. बातों ही बातों में सीमा ने नरेश की मॉ से अपने विषय में सब कुछ बता दिया था और परिवार में घुल-मिल गई थी. वह घर के कामों में हाथ बॅटाने लगी थी. नरेश उसे अपनी बहन मान बैठा था और उसकी देखभाल करने लगा था. मॉ का इलाज भी सीमा करने लगी थी और घर का सारा खर्चा भी उठाने लगी थी. अब नरेश भी पढ़ने जाने लगा था. अभाव में जीने वाला दो परिवार सुखी जीवन व्यतीत करने लगा था.

स्वास्थ्य

हिपेटाइटिस रोग से कैसे बचें?

गर्मियों के मौसम के आने के साथ ही बीमारियों का आगमन शुरू हो जाता है. टायफाइड, आत्रशोध, दस्त, बुखार इत्यादि बीमारियों के अलावा हिपेटाइटिस अर्थात पीलिया एक जानी पहचानी समस्या है.

हिपेटाइटिस मुख्यतः यकृत की कोशिकाओं की सूजन के कारण उसके सामान्य कार्य प्रभावित होने की बीमारी है. यकृत की प्रभावित कार्यक्षमता के कारण रक्त में बिलुबिरीन की मात्र ध ीरे-धीरे बढ़ती जाती है जो आंखो की पुतली के सफेद हिस्से पर सबसे पहले व त्वचा पर बाद में पीले रंग के रूप में दिखने लगती है. इसे आम जन भाषा में पीलिया कहते है. हिपेटाइटिस वायरस द्वारा संक्रमण से होती है. विभिन्न प्रकार के वायरस अलग-अलग तरह की हिपेटाइटिस करते हैं. 'ए' वायरस द्वारा हिपेटाइटिस एक होती है तथा बी वायरस द्वारा हिपेटाइटिस बी होती है. हिपेटाइटिस सी, डी तथा ई को अब पहचाना जा रहा है.

हिपेटाइटिस एक मुख्यतः दूषित जल या खाने-पीने वस्तुओं द्वारा होती है. बीमारी का वायरस पीड़ित व्यक्ति के मल में सम्मिलित होकर बाहर आता है तथा जल या इस दूषित जल से बनी खाने-पीने की वस्तुओं को सक्रंमित कर देता है. इस संक्रमित भोजन या जल द्वारा दूसरा व्यक्ति बीमार होता है. इस बीमारी से प्रभावित होने में और शरीर में उसके लक्षण आने में काफी समय लगता है. इसलिए इस बीमारी से प्रभावित व्यक्ति लगातार संक्रमण फैलाता रहता है.

हिपेटराइटिस ए एक गंभीर संक्रामक बीमारी है. इसके प्रारंभिक लक्षण हैं थकान, भूख न लगना, उबकाइंया, जी मचलना तथा भोजन से तीव्र अरुचि. इसके बाद हल्का बुखार, आंखो, त्वचा एवं मूत्र में पीलापन आता है. अन्य लक्षण है पेंट में दर्द, सुस्ती, तथा कंपकंपी के साथ बुखार. कभी-कभी दस्त भी हो जाते है. लक्षण की तीव्रता बीमार व्यक्ति की उम्र से भी प्रभावित होते है. लगभग पचास से साठ प्रतिशत छोटे बच्चो में इसके लक्षण इतने हल्के होते हैं कि कई बार पता भी नहीं लगता. बहुत हल्के पीलिया के साथ सिर्फ गाढ़े रंग का मूत्र ही इस बीमारी के प्रमुख लक्षण होते है और सात-दस दिन में यह अपने आप ठीक हो जाते है. लेकिन यह बीमार बच्चे वयस्कों में बीमारी फैलाने में प्रमुख भूमिका रखते है. हिपेटाइटिस ए के तीव्र लक्षण लगभग चार से दस हफ्ते तक रहते हैं. मुख्यतः यह स्वयं ठीक होने वाली बीमारी है. खान-पान का परहेज, पूर्ण विश्राम तथा डाक्टर की सलाह पर विटामिन तथा अन्य दवाइंया इस बीमारी के इलाज का आधार है. हिपेटाइटिस बी वायरस बी द्वारा होती है. हिपेटाइटिस बी का संक्रमण मुख्यतः रक्त द्वारा होता है. तीन प्रमुख है-पहला है दूषित खून या खून से अलग किये पदार्थ जैसे प्लांज्मा के टांसफ्यूजन द्वारा. दूसरा है बीमार व्यक्ति के रक्त से संक्रमित इंजेक्शन की सुई का दूसरे व्यक्ति में प्रयोग द्वारा. तीसर है गर्भ में स्थित शिशु को जन्म के समय संक्रमित मां के द्वारा. अन्य कारण है संक्रमित व्यक्ति से संभोग या संक्रमित व्यक्ति के शरीर के अन्य द्रव्य द्वारा संक्रमण फैलता है. हिपेटाइटिस एक से बचाव के मुख्य अस्त्र है-वातावरण की स्वच्छता, शुद्ध पेय जन, स्वच्छ एवं ताजा भोजन तथा शारीरिक स्वच्छता. भोजन ग्रहण करने से पहले तथा मल त्याग के बाद हाथों की अच्छी तरह साबुन से साफ करें. अंगुलियों के नाखून काट कर रखें. बीमार व्यक्ति को भोजन न तो बनाने दें और न परोसने दें. आजकल हिपेटाइटिस ए तथा बी दोनों से ही बचाव के टीके उपलब्ध है. एक प्रकार के हिपेटाइटिस के टीके से दूसरे प्रकार की हिपेटाइटिस से बचाव नहीं होता. दोनों ही बीमारियों के टीके पूर्ण रूप से सुरक्षित है. अपने डाक्टर की सलाह पर टीके लगवायें. इससे भविष्य में हिपेटाइटिस एक या बी होने की संभावना लगभग न के बराबर होगी.

++++++++++++++++++++

अब मेरा डुप्लीकेट बोलेगा

एक अभिनेता एक जगह उद्घाटन के लिए बुलाया गया. उद्घाटन के बाद अभिनेता ने भाषण दिया-आप भी आए, मैं भी आया, आप समय पर आए होगें, लेकिन मैं आदत के अनुसार लेट आया. अब आगे क्या बोलूं? अब मेरा डुप्लीकेट दो शब्द बोलेगा.

मुझे जीवन भर कुंवारी रहना पड़ेगा

नाकु-मैं बी.ए. पास कर लूं तो तुमसे शादी करुंगा.
संगीता-तब तो मुझे जीवन भर कुंवारी ही रहना पड़ेगा.

कविताएं

साँध्य-गीत

थकी हुई बाजार हाट से
ममता घर लौटी,
ऑचल में कुछ बॉध रखा है,
दौड़ पड़ी बेटी!
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
गोधूली की मनहर बेला
सिन्दूरी संध्या।
घुर-घुर, टन-टन, स्वर का मेला
रतनारी संध्या।
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
पॉखी सब सूरज के बेटे
पंक्ति बॉध अक्षय-वट लौटे,
हलधर की कतार लगती है
अवतारी संध्या।
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
धूल-किरण झूला ऑगन में,
ताल-कमल भूला गुंजन में,
सुबह खिलौना, रात बिछौना
दरबारी संध्या।
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
बॅधने लगी नॉव बरगद से
रथ के चक्र लगे सरहद से,
लेखा-जोखा लगी जॉचने
अधिकारी संध्या।
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
रस वात्सल्य प्रकृति की बेटी,
द्रुत-गति से अपने घर लौटी,
भीतर गोरस, बाहर गोरस
महतारी संध्या।
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
भिनसारे से, गॉव गली से
रॅग खरीद कचनार गली से
मोहन भोग थाल भर लाई
त्यौहारी संध्या।
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
नदिया दिया (कि) दिया नदिया है
अंध्रो पिया (कि) पिया न पिया है,
अॅजुरी दिया, पिया की अॅजुरी
पनिहारी संध्यां
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
जब पलाश मन हुआ विरागी,
कर्म हुआ फल का अनुरागी,
देह निवस्त्र, आत्मा ओढ़े
फगुआरी संध्या।
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
पूरब उगने का उच्चारण,
पश्चिम नाम उसी के कारण,
नूतन-भोर, नये पंखों की
तैयारी संध्या
सखि री, सिन्दूरी संध्या।
घुर-घुर, टन-टन, स्वर का मेला,
रतनारी संध्या।

रामकृपाल निगम, रीवा, म.प्र.

सत्य को सूली मिली

चुपचाप मौन हम रहते हैं
फिर भी सब बुरा ही कहते हैं.।
दीन हीनों को लगता गले रहा
वो हॅसते है जब ऑसू बहते हैं।
मेरा अपना तो कुछ भी नहीं
वो स्वार्थ को पूजा करते है।
मानवता की धज्जी उड़ गई
दीप कहॉ प्रेम के जलते हैं।
बैरागी सत्य को सूली मिली
अब आस्तीन में सॉप बस पलते हैं।

++++++++++++++++++++

धर्म की पॉखुरी

आवरण संत का आचरण आसुरी
पाप उर में रमा होठों पर बॉसुरी।
लोग समझने लगे संत पहॅुचे हुए
रात में बारूणी दिन पीताम्बरी।
पाप डरने लगा देखकर संत को
नंगी सेवा में विवश विकल माधुरी।
पढ़ पोथियॉ धर्म की कालनेमि सदा
नोंचता है रहा धर्म की पॉखुरी।
ढोगियों से बैरागी हैं खतरे बहुत
डूब जाये न कहीं भाव की नाव री।

डॉ. बृजेन्द्र सिंह बैरागी, बलिया, उ.प्र.

नाटक, ज़िन्दगी तो नहीं..?

पर्दे पर
चलती-फिरती तस्वीरें
हमारे आदर्श तो
नहीं हो सकती न!
स्थिर, बेजुबान रील को
घुमाया जाता है
तेजी से
ताकि एक सैकण्ड में
सोलह चित्र
हमारी ऑखों के आगे से
गुजर कर
हमें दिखाई पड़ते हैं
चलते-फिरते
सजीव।
लाउड स्पीकर देता है,
चित्रों को
उधार में आवाज़।
दृश्यों से प्रभावित होते हैं
कितने लोग?
हॅसते हैं-रोते हैं
कभी-बेचैन होते हैं,
कभी संतोष पाते हैं।
बेज़ान मशीन का
यह जानदार आदमी को
दिया हुआ धोखा है मात्र।
बेजुबान तस्वीरें
हमारे आदर्श
कैसे हो सकती है भला?
नाटक को
ज़िन्दगी बनाओगे,
तो स्वयं
नाटक बन जाओगे..!

हलीम आईना, कोटा, राजस्थान

लम्बी आयु का राज

एक महाशय की ६०वीं वर्षगांठ पर एक सज्जन ने उत्सुकतावश उनसे प्रश्न किया-इस लम्बी आयु तक स्वस्थ रहने के लिए आपने सबसे ज्यादा परहेज किस चीज का किया? 'डॉक्टर का' महाशय का जवाब था.

अगर किसी को कुछ देना चाहते तो उसके ओठों पर मुस्कराहट दे दो. : अज्ञात

ज्योतिष

डरें नहीं काल सर्प योग से

छाया स्वरुप ग्रह राहु व केतु की परिधि के मध्य, बाकी के सातों ग्रह (जन्म उदित लग्न के समय के) के आ जाने के कारण 'कालसर्प योग' बनता है. आप जान लें कि कालसर्प तभी बनता है जब सूर्य आदि सभी ग्रह, राहु व केतु के मध्य आ जाएं. कालसर्प योग से डरना या डराना शास्त्रसंगत नहीं है, क्योंकि यदि कालसर्प दारूण कष्ट देता है तो, कभी व्यक्ति को देश संसार में उत्तम पद, धनसंपदा कीर्ति भी प्रदान करता है.

प्रथम व सप्तमक भाव के मध्य कालसर्प योग म्रें जन्मा व्यक्ति स्वतंत्र विचारों वाला, निडर होता है व आत्मसम्मान को सदा ऊपर रखता है. द्वादश छटे भाव में कालसर्प में जन्में व्यक्ति की आंखे अकसर कमजोर होती है, पढ़ाई आदि में अत्यधिक प्रयासों के बाद ही सफलता प्राप्त होती है.

योग ११ वें व पंचम भाव के मध्य बने संतानप्राप्ति में व उनसे कष्ट प्राप्त होते रहते है. दशम व चतुर्थ भावों में कालसर्प निर्मित हो तो जातक को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई आती है किंतु अंत में उन्नति भी करता है.

नवम व तृतीय भाव में यदि शुभ दशा चले तो विदेश से लाभ भी होता है. अष्टम व द्वितीय भाव में कालसर्प योग हो तो मानसिक तनाव, असफलता, आर्थिक तंगी में घिरा रहता है. सप्तम व प्रथम भाव का कालसर्प योग, स्त्री/पति से क्लेश दिलवाता है. छठें व १२ वें भाव में कालसर्प योग हो तो व्यक्ति को संतानप्राप्ति में तो कठिनाई हो जाती है, लेकिन हो जाने के बाद कष्ट भी समाप्त हो जाते हैं. चतुर्थ व दसवें भाव का कालसर्प, पारिवारिक व माता से कष्टप्राप्ति का द्योतक होता है. तृतीय व ९वें भाव का कालसर्प व्यक्ति को विदेश में यात्राओं का लाभ देता है. द्वितीय व अष्टम भाव में पैतृक संपत्ति आदि मामलों में झगड़ें करवाता है.

सुधारः

यदि लग्न में बृहस्पति व शुक्र बैठें हो या राहु पर दृष्टि पड़ें तो कालसर्प योग कष्ट पैदा नहीं करता. यदि लग्न में सूर्य, चंद्र बलवान हों तो कष्ट कम प्राप्त होते है. चूंकि यह योग ग्रहजनित है, अतः इनका निदान भी किया जा सकता है.

विषहरि 'मां सनसादेवी' की विधिवत पूजा करें. पांच शनिवार, काले तिलों का तिलक लगाकर नारियल पर तेल मौली लपेटकर, अपने सर से तीन बार नारियल घुमाकर (भगवान शिव का ध्यान करते हुए या ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः तीन बार पढ़कर) चलते पानी में या गंगा में बहाए. घर के चौखट, मुख्यद्वार पर चांदी का स्वातिस्क चिन्ह बनवाकर लगाएं. घर में मोर पंख रखें व प्रातः उठकर व सोने से पूर्व, भगवान शिव व कृष्ण भगवान का ध्यान कर देखा करें.

जरा हस दो मेरे भाय

१. बहुत मोटी महिला के साथ-साथ काफी दूर से चला आ रहा बच्चा सामने पुल देखकर अचानक रुक गया. महिला ने प्यार से पूछा-बेटे तुम रुक क्यों गये?

बच्चे ने एक दृष्टि महिला के भारी-भरकम बदन पर डाली. फिर सकुचा कर एक बोर्ड की तरफ इशारा कर दिया. महिला ने उधर देखा, बोर्ड पर लिखा था-भारी वाहनों को पहले जाने दें.

२. पति काफी रात गये शराब पीकर घर लौटा, दरवाजे के पास पहुंचकर कुछ खट-पट सी करने लगा.

पत्नी ने जब आवाज सुनी तो वह छत पर जाकर कहने लगी अगर चाभी खो गई हो तो दूसरी चाभी फेंक दूं.

पति ने कहा-चाभी तो है मगर ताला नहीं मिल रहा है, हो सके तो दूसरा ताला फेंक दो.

३. बेटा-पिताजी, मैं सोच में पड़ा हूँ कि दांतो का डाक्टर बनूं या कानों का?

पिता-दांतो के डाक्टर बनों तो ज्यादा अच्छा है, क्योंकि हर आदमी के ३२ दांत होते हैं जबकि कान तो सिर्फ दो ही होते है.

४. मां बेटे से-रस्सी में क्यों झूल रहा है? रस्सी टूट जाने का डर तो है, मेरे हाथ-पैर टूटने का डर नहीं

५. पति(पत्नी से)-पता नहीं क्यों, आजकल मुझे रात में बड़े मीठे-मीठे सपने आ रहे है?

पत्नी (पति से)-खबरदार जो अब तुमने कभी मीठे सपने देखे. तभी मैं कहूं कि तुम्हारी डॉयबिटीज बार-बार क्यों बढ़ जाती है.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हीग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त

खाली कागज के मूल्य में पत्रिका-साधुवाद

आदरणीय द्विवेदीजी

विश्व स्नेह समाज का विशेषांक पढ़ा पसंद आया. आज के लघु पत्रिकाओं के सम्पादकों की समस्याओं को विभिन्न लेखकों ने उठाया साथ लेखक परिचय अच्छा लगा. पत्रिका निकालने का त्याग मय कार्य सराहनीय है. हास्य, कहानी, सफल व्यक्तित्व, कविताएं, जानकारी, अन्य भाषा की कहानी, रत्नाकर पाण्डेय की विचार, व्यंग्य, इलाहाबाद कल, आज और कल, अध यात्म,, कैरियर, हंगामा इंडिया, परिचर्चा, स्वास्थ्य, परम्परा, लघुकथा, ज्योतिष, इधर-उधर, महिला व्यंजन, पुस्तक समीक्षा कुल मिलाकर पत्रिका गागर में सागर है. पत्रिका के नाम में आपके हृदय की विशालता झलकती है. अपनी बात लगे करामात.

प्रकाश बाबूजी, भीलवाड़ा, राजस्थान

++++++++++++++++++++

अमूल्य अंक निकालने के लिए साधुवाद

डॉ. राजबुद्धिराजा जैसी महान एवं सुविख्यात साहित्यकार का विशेषांक भेजकर आपने मुझे उपकृत किया है. इसमें सभी कुछ पठनीय एवं प्रशंसनीय है, यह अमूल्य अंक निकालने के लिए आप साधुवाद के पात्र है.

पुष्पा रघु, पिंजौर, हरियाणा

मान्यवर, सादर नमन!

ग्रीष्मावकाश पश्चात् डाक का अम्बार उन्हीं में विश्व स्नेह समाज पढ़ा. अच्छा लगा. डॉ. बुद्धिराजा जी को जापान के सर्वोच्च से नवाजा गया. मेरी ओर से उन्हें शुभकामना दें दीजिए. अल्प सी मुलाकात हुई है उनसे इलाहाबाद में

डॉ. **सरोज गुप्ता,** आगरा, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

प्रिय द्विवेदीजी, सम्प्रेम नमस्कार

आपके द्वारा प्रेषित 'विश्व स्नेह समाज' का जुलाई अंक प्राप्त हुआ, बहुत-बहुत धन्यबाद. सम्पूर्ण अंक साहित्य प्रभा से दैदीप्यमान है.

बृज बिहारी ब्रजेश, मोहम्मदीखीरी, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

आदरणीय द्विवेदीजी,

पत्रिका का सितम्बर अंक मिला ध न्यबाद. सभी गद्य-पद्य रचनाएं अच्छी लगी. व्यंग्य-नींद के मारे, लालू छैल छबीला, में हास्य व्यंग्य नहीं फुहड़ता और चाटुकारिता है.

श्राद्धकर्म....में आपने जो लिखा है पढ़कर अत्यधिक दुःख हुआ. ऐसा तो दानव भी नहीं करता. पितृपक्ष पवित्र पक्ष और श्राद्धकर्म पावन कर्म है. सोच अपना-अपना मानो तो देव नहीं तो पत्थर.

राजीवन नयन तिवारी, दुमका, झारखंड

++++++++++++++++++++

पत्रिका का नवम्बर अंक मिला. उपयोगी व स्तरीय सामग्री का प्रकाशन हुआ है. पत्रिका की प्रगति हेतु हमारी शुभकामनाएं स्वीकारें.

अतुल कुमार त्रिपाठी, डबरा, म.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्रिका के बारे में रवीन्द्र ज्योति मासिक से जानकारी मिली. अवलोकनार्थ प्रति भेजें.

सूरज तिवारी 'मलय', विलासपुर, छत्तीसगढ़

++++++++++++++++++++

आदरणीय द्विवेदी जी,

सादर प्रणाम.

पत्रिका का सितम्बर अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका बहुत ही लोकप्रिय एवं युवा साहित्यकारों के लिए मार्गदर्शक थी.

राम प्रकाश गौतम, इलाहाबाद,उ.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्रिका का अगस्त अंक मिला. एक लघु आकार, कविता, कहानी, लेख सब समेटने का आपका प्रयास स्तुत्य है. रचनाएँ संक्षिप्त होते हुए भी महत्वपूर्ण है. यह जानकार प्रसन्नता हुई कि यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यह पत्रिका छः वर्ष पूर्ण कर चुकी है. पत्रिका की दीघार्यु की कामना के साथ.

डॉ.जगदीश्वर प्रसाद, अलवरगंज

++++++++++++++++++++

गरिमापूर्ण पत्रिका मिली. पढ़कर बड़ा आनन्द मिला. आपका प्रयास स्तुत्य है. सामग्री बड़ी आकर्षक और उपयोगी तथा पठनीय है. विशेषकर साहित्य मेला लेख अत्यंत उपयोगी तथा सूचनात्मक है. कृपया मेरी बधाई स्वीकारें.

डॉ. गंगादत्त शास्त्री, जम्मूतवी

++++++++++++++++++++

आपने नैतिक साहस का परिचय दिया है

पत्रिका का अगस्त अंक मिला. आपके प्रयासों की जितनी सराहना की जाए कम है. आपने नैतिक साहस का परिचय दिया है.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की योजना, उद्देश्य व रुपरेखा जानकार और भी प्रसन्नता हुई. मेरी शुभकामनाएं.

महेन्द्र पाल, प्रधानाचार्य, श्री जैन इ. कालेज, देवबंद,

++++++++++++++++++++

आदरणीय बन्धुवर,

पत्रिका का अंक मिला. पृष्ठ १५ पर सजग प्रहरी नाम से कुछ दोहे अवश्य पढ़ने को मिले.

रोज-रोज रचती नहीं,
प्रकृति सुखद संयोगं
युगों-युगों में जन्मते,
जन-हितकारी लोग।।

उक्त दोहे ने प्रभावित किया.

ओम शरण आर्य चंचल, अल्मोड़ा, उत्तरांचल

++++++++++++++++++++++

भाई गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदजी जी

जय हिन्द

कृपया पत्रिका के मई ०७ मे छपे डॉ. महेश चन्द्र शर्मा का लेख समाज के निर्माण मं साहितय का योगदान देखें. लेखक का यह कहना है कि सांप श्री अज्ञेय जी की कविता है, ठीक नहीं है. सांप कविता अज्ञेय जी की मौलिक कविता नहीं है वरन अंग्रेजी कविता का उनके द्वारा किया हुआ अनुवाद है. आप लेखक की इस भ्रांति को ठीक करना उचित समझेंगें.

अशोक खान्ना, संपादक, भारत-एशियाई साहित्य,दिल्ली

++++++++++++++++++++++

श्रीयुत सम्पादक जी

पत्रिका सितम्बर अंक मिला. पत्रिका अच्छी है और सामग्री भी पठनीय है. आज के समय में जब पूजीपंतियों ने उद्योग के रुप में अपनाए इस कार्य को लाभ-हानि के गणित के कारण छोड़ दिया है तब ऐसी छोटी-छोटी पत्रिकाएं साहित्य का दीप जलाती रहें यह काफी जीवट और त्याग का कार्य है. इस कारण पत्रिका के प्रकाशित होने रहने की बधाई और साधुवाद.

बी.जी.चतुर्वेदी,, छतरपुर, म.प्र

++++++++++++++++++++++

गागर में सागर जैसी है

पत्रिका का अप्रैल ०७ अंक मिला. यह पत्रिका गागर में सागर जैसी है. चौतीस पृष्ठ में ही देश विदेश से लेकर हास्य, व्यंग्य, लघुकथा, कहानी, कविता, समसामयिक घटनाओं, कानूनी उलझनों का समावेश कोई साधारण बात नहीं है. अपने आप में यह अनूठी पत्रिका है. इसके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ. **कुलसचिव,**

विक्रमाशिला विद्यापीठ, गांधीनगर

++++++++++++++++++++++

मोहतरम द्विवेदी जी,

आदाब,

पत्रिका अगस्त अंक मिला. पढ़कर अच्छा लगा. पत्रिका की समस्त सामग्री पठनीय है, स्तरीय है. इस साहित्यिक पत्रिका के लिए मेरी बधाई. अपनी नेक दुआओं के साथ-

शम्मी-शम्स वारसी, आबूरोड, राज.

++++++++++++++++++++++

मैंने खोजा आज तक, मिला नहीं स्नेह

विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ. आप हिन्दी की जो अनवरत सेवा कर रहे है इसके लिए बधाई के पात्र है. आपको हार्दिक धन्यबाद.

मैंने खोजा आज तक, मिला नहीं स्नेह
आ 'स्नेह समाज', मिटा दिया संदेह।।
मिटा दिया संदेह, विगत का किया इशारा।
है अफसोस महान, मुझे पीछे बैठारा।
कहँ 'विमल' समझाइ, तीर है तीखे पैंने।
असमंजस में पड़ा, किया क्या गुनाह मैंने।।

आपको बार-बार धन्यवाद. नमस्कार.

डॉ. एम.पी.विमल, रा०अध्यक्ष, राष्ट्रीय उन्नतिशील दल, मथुरा,उ.प्र.

++++++++++++++++++++++

आपने पत्रिका में नालंदा दर्पण को विज्ञापित किया है इसके लिए आभारी समझें. 'मिसाइल क्रांति के जनक ए. पी.जे. अब्दुल कलाम अगस्त अंक का मुख्याकर्षण है. डॉ. तारा सिंह की ग़ज़ल की पक्तियों का वजन बराबर नहीं है फिर प्यार नहीं है की दुबारा प्रयोग खटकता है.

डॉ. स्वर्ण किरण, संपादक,नालंदा दर्पण,नालंदा

++++++++++++++++++++++

स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

संजय चतुर्वेदी, लखीमपुरखीरी, उ.प्र.

इनके भी पत्र मिलेः-

१. प्रधान पाठक, छत्तीसगढ़
२. टी.एस.राजु शर्मा,वालजा
३. रामकृपाल निगम, रीवा, म.प्र.
४.कपिलेश्वर अम्बवस्ट, कटिहार, बिहार
५.शम्भू लाल जालान,कोलकाता
६.कैलाश नाथ जलोटा, लखनऊ,उ.प्र.
७.विदुषी शर्मा, शिमला

लड़कियों के कुछ सर्वश्रेष्ठ नाम

ऋ-ऋचा, ऋतुक्षी, ऋजुला, ऋच्छका, ऋजु, ऋजुभा, ऋतिका, ऋद्धिप्रिय, ऋतु, ॠति, ऋद्धि, ऋिषिका

ओ-औली, ओमिनी, औदायउ, ओजस्विनी

ए-एनी, एकता, ऐश्वर्या, ऐश्वार्यलक्ष्मी, एषा, एका, ऐश्वर्य, ऐश्वर्यप्रभा

क- कुहु, कजली, कल्पना, कादंबरी, कृति, करीना, कुशंगी, कादंबिनी, कांचि, करूणा, कस्तूरी, कमलिनी, कंचन, कविता, कमलज, कालिन्दी, कांक्षा, काजल, कमलेश, कुमारिका, कजरी, कामना, करतारी, करकप्रभा, काम्या, कोयल, कल्याणी, कमलावती, कुशा, कावेरी, कामधेनु, कमलिनी, कंकन, किरन, कामाक्षी, कलावती, कंगना, कुमुद, किन्नरी, कुमारिका, कपिला, कुसुम, किशोरी, कुसुभावती, कमला, कोमल, कृतिका, कुसुमिता, कमली, कनिका, कोकिला, कौशल्ला, कला, कशिश, कपिला, कनक, प्रभा, कामा, कुंजना, कामाक्षी, कनक रूपा, कांता, कुंकुम, कार्निका, कनक रेखा, किर्मि, कुमारी, कामिनी, कमलनयनी, कीर्ति कृष्णा, कोपंला, कल्यानी, कोमला, कानन, कुंजलता, कामलता, कृष्णी, कारिका, कुंजला, कनकसुंदरी

शेष अगले अंक में...

उदय भानु हंस कविता पुरस्कार समारोह सम्पन्न

१९६७ में हरियाणा के प्रथम राज्यकवि के रुप में सम्मानित उदयभानु हंस द्वारा स्थापित साहित्य कला संगम साहित्यिक संस्था का १३वॉ हंस कविता पुरस्कार समारोह-२००७ में हंस के ८२वें जन्मोत्सव पर हिसार में सम्पन्न हुआ. कार्यक्रम में कलमदंश के संपादक योगेन्द्र मौदगिल, पानीपत एवं रघुवीर अनाम-हिसार को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए 'हंस कविता पुरस्कार-२००७' से सम्मानित किया गया.

प्रो.राजेन्द्र को भाषा भूषण पुरस्कार

बीड़, महाराष्ट्र, से प्रकाशित राष्ट्र स्तरीय पत्रिका 'लोकयज्ञ' के संपादक व राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त महान हिन्दी सेवी पत्रकार प्रो. सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत' को सरिता लोकभारती संस्था सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश ने इस साल का 'भाषा भूषण पुरस्कार' देने का निर्णय लिया है. प्रत्येक वर्ष लोकभारती संस्था रामायण महोत्सव का आयोजन करती है. इस महोत्सव में सम्पादको, पत्रकारों और साहित्यकारों को सम्मानित किया जाता है. यह सम्मान ६ नवम्बर २००७ को होने वाले पॉचवे रामायण महोत्सव में प्रदान किये जाऐगें.

निःशुल्क भेंट

ख्याति प्राप्त कविवर प्रो० महेन्द्र जोशी 'भारत भाषा भूषण' के ८३वें जन्म दिन के अवसर पर उनका बहुप्रशंसित 'काव्य संग्रह' साहित्यकारों के लिए निःशुल्क भेंट स्वरुप उपलब्ध है. मात्र एक पोस्टकार्ड लिख कर मंगवाएं.

प्रंबधक, दिव्य प्रकाशन

३०ए, गोपाल नगर, अमृतसर, १४३००१

पत्रकार महासंघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी घोषित

इलाहाबाद. भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में केन्द्रीय इकाई की घोषणा की गई. जिसमें डॉ० रत्नाकर पाण्डेय-पूर्व सांसद, राज्यसभा, दिल्ली, मिथिलेश द्विवेदी-ब्यूरोचीफ समाचार ज्योति, राम सजीवन पाण्डेय-सम्पादक संग्राम बटोही, उमाशंकर मिश्र-सम्पादक, यूएसएम, डॉ० वीरेन्द्र दुबे-सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, गोपाल कृष्ण यादव-सम्पादक यशोदानन्दन, रामप्रकाश वरमा-सम्पादक प्रियंका, अरुण कुमार अग्रवाल-सम्पादक, श्रोता समाचार, डॉ० वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' सम्पादक-सुपर इंण्डिया, पं. रामचन्द्र शुक्ल-सम्पादक, साहित्यकार कल्याण परिषद को राष्ट्रीय सरंक्षक, डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय को राष्ट्रीय अध्यक्ष, सरदार दिलावर सिंह, ब्रहमचारी दूबे, श्याम नारायण श्रीवास्तव, आशुतोष सिंह, राम बाबू चौबे को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, रामपाल त्रिपाठी को राष्ट्रीय मुख्य महासचिव, गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, जे.पी.शुक्ला को राष्ट्रीय महासचिव, डॉ० रामसेवक शुक्ल को राष्ट्रीय संगठन सचिव, विजय चितौरी, मनोज तिवारी को संयुक्त सचिव, विजय विद्रोही को प्रवक्ता, जय शंकर त्रिपाठी को कोषाध्यक्ष बनाया गया.

पत्रकार महासंघ की उत्तर प्रदेश इकाई घोषित

इलाहाबाद. भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की उत्तर प्रदेश की कार्यकारिणी की बैठक में प्रदेश इकाई की घोषणा की गई. जिसमें राधेश्याम द्विवेदी-लखनऊ, श्री प्रबन्ध त्रिपाठी-इटावा, डॉ० रामेश्वर वर्मा-कानपुर, झूलन पाठक-सोनभद्र को सरंक्षक, श्री रमाकांत त्रिपाठी-इलाहाबाद को अध्यक्ष, आर.पी.उपाध्याय-सोनभद्र कार्यकारी अध्यक्ष, अद्वैत दशरथ तिवारी-प्रतापगढ़, प्रेम शर्मा रेशु-लखनऊ, लल्लू प्रसाद निषाद-सोनभद्र, डॉ. एस.डी.यादव-वाराणसी को उपाध्यक्ष, रिजवान चंचल-मुख्य महासचिव, सतीश भाटिया-सोनभद्र, सत्य प्रकाश गुप्ता-सुल्तानपुर को महासचिव, राज किशोर तिवारी-लखनऊ, विपुल कुमार तिवारी-देवरिया, उपेन्द्र कुमार तिवारी-सोनभद्र को संयुक्त सचिव,धीरेन्द्र राव चौबे-इटावा, मुक्तिनाथ उपाध्याय-देवरिया, सनोज कुमार तिवारी-सोनभद्र को संगठन सचिव, नर्मदेश्वर पाण्डेय-देवरिया, सुनील कुमार सिंह-सोनभद्र, उमेश चन्द्र श्रीवास्तव, इलाहाबाद को प्रवक्ता, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, इलाहाबाद को कोषाध्यक्ष, डॉ० वीरेन्द्र कुसुमाकर लखनऊ को कार्यालय सचिव बनाया गया.

सम्मानार्थ प्रविष्टि आमन्त्रित

विन्ध्यवासिनी हिन्दी विकास संस्थान

ई २०६ सी, कृष्ण विहार, नई दिल्ली-४१

हिन्दी विकास संस्थान अपने पांचवे वार्षिक अधिवेशन, अप्रैल २००८ में वरिष्ठ हिन्दी सेवियों तथा साहित्यकारों से उनके सम्मानार्थ ३१ जनवरी २००८ तक प्रविष्टि आमन्त्रित करता है. सम्मान इस प्रकार है-साहित्य गौरव, बलवीर सिंह स्मृति सम्मान, बाबा दीप सिंह सम्मान, अवधेश नारायण त्रिपाठी स्मृति सम्मान, सुरेन्द्र कौर स्मृति सम्मान, सरस्वती पाण्डेय स्मृति सम्मान तथा प्रहलाद सिंह स्मृति सम्मान.

सभी प्रतिभागी गण अपना जीवन परिचय, दो चित्र, दो पता युक्त पोस्टकार्ड, अपनी उत्कृष्ट पुस्तक की दो प्रतियां तथा पैतिस रुपये का डाक टिकट रजिस्टर्ड डाक द्वारा निर्धारित तिथि के अन्दर भेजें.

सुशील कुमार पाण्डेय

निदेशक

विज्ञान के कविता होने का अर्थ है कवि कुलवन्त सिंह

कविता विज्ञान नहीं होती, लेकिन विज्ञान के साथ चले तो इसका व्यक्तित्व कुहरे में खिली धूप की तरह आकर्षक होता है-कवि कुलवंत सिंह की कविताओं को पढ़कर यही कहना ठीक होगा. 'निकुंज' ५१ कविताओं का संग्रह है, जो कविताएँ कुलवन्त सिंह के संवेदनशील मन और आलोचक मस्तिष्क की धाराओं से मिलकर बनी कविताएँ हैं, जो समकालीन हिन्दी कविताओं के लिए रसायन की तरह हितकारी है.हितकारी इस अर्थ में कि आज की कवितॉए किस तरह व्यक्त होकर और क्या कह कर अपने अस्तित्व को बचाए रख सकती है, इसका संदेश या मंत्र इन कविताओं में व्याप्त और विखरा हुआ है. यह सही है कि आज हम जिस परिवेश में जी रहे हैं,

जिन्दगी कदाचित जिसमें अपनी
अंतिम घुटन भरी/सॉसे ले रही है
जहॉ,
निःशब्द/रात्रि की नीरवता/स्याह काले
अपने दामन में/लपेटे हुए है-एक
टीस।अंतिम सांसे, पृ.६३

लेकिन कवि कुलवन्त इसी में घुट कर नहीं रहते, एक सुलझे वैज्ञानिक की तरह रात्रि की नीरवता के कारण और उससे मुक्ति के रहस्यों को खोलते भी हैं और तब इनकी कविताएँ भी कालिखपुती भाषाओं में व्यक्त कुंठाओं और बड़बोलेपन की आधुनिक कविताओं का साथ छोड़ कर साहित्य के मंगलमय रहस्य-लोक से जुड़ जाती है. कुलवन्त सिंह की कविताएँ अन्धकार के पेट में रोशनी का स्तंभ है, जिसमें पूरी दुनिया के ममता है, रोशनी है-इनकी कविताओं का यह वैष्णव व्यक्तित्व उनकी कई-कई कविताओं में एकदम खुल कर भी सामने आ जाता है, जीवन को न बांधिए/नियमों से/उसूलों से। जीवन तो इत्र है/इसको दीजिए महकने

....

डूबते सूर्य को देखा..../डूबते-डूबते भी रश्मियॉ/बिखराता जाता/ महापुरुषों-सा/कुछ देकर जाता

अगर आपत्ति न लगे तो कुलवन्त सिंह के कविता-संग्रह 'निकुंज' के लिए एक पंक्ति में मैं कहना चाहूँ तो कहूँगा कि आज के उबलते परिवेश के महाभारत के बीच दिशाहीन, मतिभ्रम निस्तेज अर्जुनों के समक्ष पढ़ी गई नई 'गीता' है, जिस गीता का मूल्यांकन, काव्यशास्त्र की शब्दशक्ति, रीति-गुण, ध्वनि और रस की जमीन पर नहीं, उसमें व्यक्त वृहत्तर जीवनदृष्टि के आधार पर होता है, वैसे कवि कुलवन्त सिंह का 'निकुंज' काव्य की ध्वनि को भी समझता है, रीति-गुण की शैली को भी और शायद बहुत बेहतर ढंग से यही कारण है कि कथ्य के बदलते ही कविता की शैली भी उसी रंग में बदल जाती है. कवि का यह 'निकुंज' किसी एक खास रसवादी का घर नहीं है, रसों का रास है इस काव्यशाला में भावों के जितने छोटे-बड़े रंग हो सकते हैं-'निकुंज' में सब साथ है. अगर ठीक से निकुंज के स्वर को पकड़ने की कोशिश करें तो हमें हिन्दी काव्य के आदिकाल से लेकर आधुनिककाल के नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल तक की कविताओं के स्वर गूंजते मिलेगें. लेकिन सारे स्वरों में एक स्वर सबसे अधिक मुखर हो, और वह यह,

आओ खोजे इक नई दुनिया को।
जिसमें तुम, तुम न रहो, मैं, मैं न रहूँ
बस हम रहें

हिन्दी की समकालीन कविता में यह कुछ अलगसा स्वर है, जो आज की कविताओं में दुर्लभ हो गया है, और जो कवि कुलवन्त सिंह में आकाशदीप की तरह उठता है.

समीक्षकः डॉ. अमरेन्द्र

पुस्तक का नामः निकुंज-काव्य संग्रह

लेखकः कुलवंत सिंह **मूल्यः**५०/-रुपये मात्र

प्रकाशकःकुलवंत सिंह, वैज्ञानिक अधिकारी, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई-४०००८५

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1.	मधुशाला की मधुबाला	:	लेखक : राजेश कुमार सिंह	मूल्य 10.00
2.	अपराध	:	लेखक : राजेश कुमार सिंह	मूल्य :10.00
3.	सुप्रभात	:	दस रचनाकारों का संग्रह	मूल्यः 10.00
4.	निषाद उन्नत संदेश	:	लेखकःचौ0 परशुराम निषाद,	मूल्यः 10.00
5.	अदभुत व्यक्तित्व	:	लेखकः गोकलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः 10.00

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखें: मनीआर्डर/डी.डी.
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

प्रस्तावित

स्नेहाश्रम आपसे सहयोग की अपील करता है

१.स्नेहालय (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम) २.हिन्दी महाविद्यालय ३.चिकित्सालय
४.पुस्तकालय ५.प्रकाशन ६.गौशाला

इसमें समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था, अध्यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से रोजगार परक शिक्षण. अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण गरीबों का निःशुल्क इलाज. विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकों से परिपूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की व्यवस्था, दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था तथा गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था.

नोटः

१.जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा. २.१ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा. ३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं. ४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा.

जनसे, जन द्वारा, जन के लिए

सहयोग के लिए लिखें या मिलेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: gpfsociety@rediffmail.com,sahityaseva@rediffmail.com

शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य

अपनी प्रतियां बुक करायें, और हजारों के ईनाम पाए

आरक्षण, जातिवाद और नारी शोषण के खिलाफ जबरदस्त आवाज बुलंद करने वाला हर युवा के दिल की आवाज, हर नारी के मन की सोच को उजागर करने वाला *गोकुलेश्वर कुमार का*

लघु उपन्यास

रोड इस्पेक्टर

कीमत 20 रुपये

अभी अपनी प्रति सुरक्षित करवा लें. कहीं देर ना हो जाए, ...

आप अपनी प्रति पोस्ट आफिस और बैंक चार्जेज से बचने के लिए पंजाब नेशनल बैंक की किसी शाखा से खाता संख्याः 0369000100161306 जीरो थ्री सिक्स नाइन त्रिपल जीरो वन डबल जीरो वन सिक्स वन थ्री जीरो सिक्स में जमा कर अपनी रसीद की कापी अपने पते के साथ कार्यालय को भेज देवें अथवा मनिआर्डर/बैक डाफ्ट. भेजें. चेक स्वीकार्य नही होगा. प्रत्येक बुकिंग का एक नंबर है, उनमें से कुछ नंबर ईनामी है. कुल 40 ईनाम है.

लिखेंः **प्रसार सचिव,**

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

मो० ६३३५१५५६४६ **email:** roadinspector@rediffmail.com

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306 / 2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

साहित्य श्री सम्मान १० हेतु प्रविष्टिया आमंत्रित

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा २००३ से लगातार साहित्यकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों को पुरस्कार प्रदान किये जा रहे हैं. इस वर्ष पांचवे साहित्य मेला के अवसर पर पुरस्कारों की संख्या में वृद्धि करते हुए कुल २५ पुरस्कार देने का निर्णय लिया गया है.

१. **साहित्य श्री सम्मानः**(रु०५००१/-) एक कहॉनी तीन प्रतियों में.

२. **डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मानः** (रु०२५००/-) एक नाटक तीन प्रतियों में

३. **बाल श्री सम्मानः**(रु०११००/-) एक बाल कहॉनी तीन प्रतियों में

४. **कैलाश गौतम सम्मानः** कोई एक हास्य/व्यंग्य कविता तीन प्रतियों में

५. **डॉ. किशोरी लाल सम्मानः** श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों में

६. **राजभाषा सम्मानः** यह सम्मान सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाएगें.

७. **समाज श्रीः** गत ५ वर्षो के सामाजिक कार्यो का सम्पूर्ण लेखा-जोखा तीन प्रतियों में

८. **सम्पादक श्रीः** पत्रिका के कोई तीन अंक तीन प्रतियों में

९.**युवा पत्रकारिता सम्मानः** पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

१०.**राष्ट्रभाषा सम्मानः** यह अहिन्दी भाषी क्षेत्र के किसी विद्वान द्वारा हिंदी के उत्थान के लिए किए गए कार्य के लिए दिया जाएगा. सम्पूर्ण जानकारी सहित लिखें.

१० **मानद उपाधियांः** सम्पूर्ण साहित्यिक उपलब्धियों का लेखा जोखा तीन प्रतियों में

११. **विश्व हिंदी साहित्य सेवा अंलकरणः** लेख/संस्मरण/व्यंग्य/नाटक/उपन्यास तीन प्रतियों में

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा. उनका निर्णय अंतिम तथा मान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, पत्रिकाएं लौटायी नहीं जाएगी. पुस्तकों के किसी भी पृष्ठ पर पेन से कोई शब्द न लिखें. ये पुरस्कार इलाहाबाद में आयोजित एक गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में *फरवरी २०१०* में प्रदान किये जायेंगे.

विशेषः १. अपनी रचनाओं पर अपना नाम/पता न लिखें। मौलिकता के लिए केवल हस्ताक्षर करें।

२. सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड/एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा भेजें।

३. प्रविष्टि के साथ १००/–रुपयें का धनादेश भेजना अनिवार्य होगा. धनादेश/बैक ड्राफ्ट सचिव के नाम से ही भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगें.

४. प्रविष्ट्रियों के साथ सचित्र स्वविवरणीका अवश्य भेजें.

अंतिम तिथिः ३० नवम्बर २००९

लिखेंः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–९३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया. आर.आई.आई यूपीहिन्दी2001 / 8380 डाकपंजी.सं0ः एडी.306 / 2006–08 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी